

# क्या कांग्रेस-भाजपा से अलग विकल्प तलाश रहा हिमाचल?

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश में अगला विधानसभा चुनाव अभी दूर है, लेकिन सत्ता की लड़ाई शुरू हो चुकी है। कांग्रेस सत्ता में वापसी का दावा कर रही है तो भाजपा पांच साल बाद सत्ता परिवर्तन की परंपरा के भरोसे सत्ता में लौटने की तैयारी में है। दोनों दल अपने-अपने पक्ष में माहौल होने के दावे कर रहे हैं, लेकिन इस बार चुनावी बहस के बीच एक बड़ा सवाल उभर रहा है कि “क्या कांग्रेस और भाजपा से अलग कोई मजबूत राजनीतिक विकल्प हिमाचल की जनता को आकर्षित कर सकता है?”

2022 में कांग्रेस ने 40 सीटें जीतकर सरकार बनाई थी, जबकि भाजपा 25 सीटों पर सिमट गई थी। तीन निर्दलीय भी विधानसभा पहुंचे। अब 2027 के संभावित चुनाव को लेकर दोनों प्रमुख दल अपने समीकरण साध रहे हैं। मगर इस बार केवल सत्ता विरोधी लहर या सत्ता परिवर्तन की परंपरा पर निर्भर रहना दोनों के लिए जोखिम भरा हो सकता है।

हिमाचल का मतदाता सरकारों का मूल्यांकन केवल पार्टी के नाम से नहीं करता। मुख्यमंत्री का व्यक्तित्व, काम करने की शैली और सरकार का जमीन पर असर भी उसके फैसले को प्रभावित करता है। यही वजह है कि आज जय राम ठाकुर और सुखविन्द्र सिंह सुक्खू के कार्यकाल की तुलना प्रेम कुमार धूमल और वीरभद्र सिंह के दौर से हो रही है। धूमल और वीरभद्र दोनों की अपनी मजबूत राजनीतिक पहचान थी। दोनों लंबे समय तक प्रदेश की राजनीति के केंद्रीय चेहरे रहे और अपने-अपने दलों से आगे व्यक्तिगत जनाधार भी रखते थे। विकास को लेकर उनकी प्राथमिकताएं और राजनीतिक शैली

अलग थीं, लेकिन उनके कार्यकाल की अपनी स्पष्ट पहचान बनी।

आज सवाल यह है कि क्या जयराम और सुक्खू अपने कार्यकाल की ऐसी ही अलग पहचान बना पाये हैं? कांग्रेस के सामने चुनौती अपने पांच साल के शासन को भाजपा के पिछले कार्यकाल से अलग साबित करने की है। भाजपा के सामने भी कम बड़ी चुनौती नहीं है। 2017 में 44 सीटों के साथ सत्ता में आने के बाद 2022 में उसका आंकड़ा 25 तक क्यों पहुंचा, इसका जवाब उसे देना होगा।

हिमाचल की आर्थिक स्थिति भी चुनाव का बड़ा मुद्दा बनने वाली है। यह संकट किसी एक सरकार की देन नहीं है। राज्य की कुल देनदारियां 2012-13 में करीब 28,707 करोड़ रुपये थीं, जो 2017-18 में बढ़कर 47,906 करोड़ रुपये हो गई। मार्च 2024 तक यह आंकड़ा करीब 95,633 करोड़ रुपये पहुंच गया। 2024-25 में राजस्व घाटा करीब 6,805 करोड़ और राजकोषीय घाटा 12,611 करोड़ रुपये रहा। ब्याज भुगतान पर ही 6,261 करोड़ रुपये खर्च हुए। इन आंकड़ों के बीच राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप होंगे, लेकिन जनता का सवाल ज्यादा सीधा होगा “कर्म बढ़ने के साथ रोजगार, आय और विकास की रफ्तार कितनी बढ़ी?”

सुक्खू सरकार के लिए रोजगार का मुद्दा विशेष रूप से कठिन चुनावी परीक्षा बन सकता है। कांग्रेस ने सत्ता में आने से पहले युवाओं को रोजगार देने का वादा किया था। रोजगार, महंगाई, कर्मचारियों के वित्तीय मुद्दे, स्वास्थ्य, शिक्षा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी चुनावी बहस का हिस्सा बनेंगे। विपक्ष इन्हें सरकार की विफलता बताएगा और सरकार अपने फैसलों

के जरिए जवाब देगी।

लेकिन 2027 में सबसे दिलचस्प सवाल तीसरे विकल्प का होगा। हिमाचल के चुनावी इतिहास में 1998 इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। उस चुनाव में कांग्रेस और भाजपा दोनों को 31-31 सीटें मिली थीं। हिमाचल विकास कांग्रेस ने पांच सीटें जीतीं और एक निर्दलीय भी विधानसभा पहुंचा। यही पांच सीटें सत्ता की चाबी बन गईं। हिमाचल विकास कांग्रेस के समर्थन से भाजपा ने सरकार बनाई और प्रेम कुमार धूमल मुख्यमंत्री बने। यानी तीसरा दल उस समय केवल वोट काटने वाला खिलाड़ी नहीं था, बल्कि उसने सरकार बनाने का पूरा राजनीतिक गणित बदल दिया था।

निर्दलीयों की भूमिका भी कई चुनावों में महत्वपूर्ण रही है। 2003 में छः, 2012 में पांच, 2017 में दो और 2022 में तीन निर्दलीय विधायक चुने गए। हालांकि इनका प्रभाव मुख्यतः क्षेत्रीय रहा, लेकिन करीबी मुकाबले में कुछ सीटों पर मजबूत निर्दलीय उम्मीदवार कांग्रेस और भाजपा दोनों के समीकरण बिगाड़ सकते हैं।

इसी पृष्ठभूमि में वीरभद्र सिंह की राजनीतिक विरासत को आधार बनाकर नया राजनीतिक मंच खड़ा करने की कोशिश भी महत्वपूर्ण हो जाती है। वीरभद्र सिंह का प्रदेश में लंबा राजनीतिक प्रभाव रहा। उनका नाम केवल एक पूर्व मुख्यमंत्री के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्तिगत जनाधार वाले नेता के रूप में लिया जाता है। अगर किसी तरह प्रदेश में यह मंच खड़ा हो जाता है जिसके कयास लगाये जा रहे हैं तो “क्या वीरभद्र का नाम अपने आप वोट में बदल सकता है?”

नई पार्टी के लिए 68 विधानसभा क्षेत्रों में संगठन खड़ा

करना, मजबूत उम्मीदवार तैयार करना, बूथ स्तर तक कार्यकर्ता पहुंचाना और चुनाव तक उस संगठन को सक्रिय रखना आसान नहीं होगा। पहले वीर कांग्रेस के नाम से राजनीतिक दल बनाने की पहल सामने आ चुकी है, लेकिन घोषणा और धरातल पर राजनीतिक ताकत खड़ी करने में बड़ा अंतर है। यदि कोई नया मंच मैदान में उतरता है तो उसे नाम और नारों से आगे जाकर वोट जुटाने की क्षमता साबित करनी होगी।

आम आदमी पार्टी का 2022 का प्रदर्शन भी तीसरे विकल्प के लिए बड़ा सबक है। पार्टी ने 67 सीटों पर चुनाव लड़ा, लेकिन कोई उम्मीदवार जीत नहीं पाया और सभी उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई। इससे साफ होता है कि हिमाचल में केवल राष्ट्रीय पहचान के सहारे राजनीतिक जमीन तैयार नहीं की जा सकती। यहां स्थानीय चेहरे, व्यक्तिगत पकड़, क्षेत्रीय मुद्दे और बूथ स्तर का संगठन निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

हिमाचल में 2003 में कांग्रेस, 2007 में भाजपा, 2012 में कांग्रेस, 2017 में भाजपा और 2022 में कांग्रेस सत्ता में आयी। यही इतिहास भाजपा को उम्मीद देता है कि 2027 में फिर सत्ता परिवर्तन होगा। लेकिन हर चुनाव अपना अलग राजनीतिक गणित लेकर आता है। भाजपा के लिए चुनौती केवल कांग्रेस सरकार के खिलाफ माहौल बनाना नहीं होगी, बल्कि अपनी पिछली सरकार का भी हिसाब देना होगा। कांग्रेस को भी केवल भाजपा विरोधी भावना के भरोसे नहीं बैठना होगा, बल्कि अपने पांच साल के काम का हिसाब जनता के सामने रखना होगा।

तीसरे विकल्प के लिए रास्ता दोनों से कहीं कठिन है। उसे

कांग्रेस और भाजपा से नाराज मतदाताओं को एक दिशा देनी होगी। यदि किसी तीसरी ताकत को कुछ विधानसभा क्षेत्रों में मजबूत चेहरे मिलते हैं और कांग्रेस-भाजपा का मुकाबला करीबी रहता है तो वह कई सीटों पर चुनावी गणित बदल सकती है। लेकिन केवल नाराजगी किसी पार्टी को सत्ता तक नहीं पहुंचाती। उसके लिए संगठन, नेतृत्व, उम्मीदवार और भरोसा चाहिए।

2027 का चुनाव अभी यह तय नहीं करता कि अगला मुख्यमंत्री कौन होगा, लेकिन यह जरूर तय करेगा कि हिमाचल की राजनीति अगले पांच साल तक फिर कांग्रेस और भाजपा के बीच घूमेगी या कोई नया राजनीतिक विकल्प अपनी जगह बना पाएगा। कांग्रेस से पूछा जाएगा “पांच साल में क्या बदला?” भाजपा से सवाल होगा कि “आपको फिर मौका क्यों दिया जाये?” और तीसरे विकल्प से जनता पूछेगी कि “आप दोनों से बेहतर क्या देंगे?”

यही तीन सवाल 2027 की चुनावी राजनीति की दिशा तय कर सकते हैं। यदि कांग्रेस और भाजपा दोनों जनता की नाराजगी को समझने में चूकते हैं और कोई तीसरी ताकत उस असंतोष को संगठन और भरोसे में बदल देती है, तो 1998 की तरह हिमाचल में सत्ता का गणित फिर बदल सकता है। लेकिन यदि तीसरा विकल्प घोषणा, प्रेस वार्ता और सोशल मीडिया से आगे नहीं बढ़ा तो मुकाबला फिर उन्हीं दो दलों के बीच रहेगा।

इसलिए 2027 की असली लड़ाई अभी सीटों की नहीं, भरोसे की है। सत्ता किसके हाथ जाएगी, इसका फैसला पार्टियों के दावों से नहीं, उस मतदाता के हाथ में होगा जो अब पूछ रहा है कि सरकार कोई भी हो, मेरी जिंदगी में बदला क्या?

## विकसित भारत के निर्माण में युवा निभाएं अहम भूमिका : राज्यपाल

शिमला/शैल। राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने युवाओं से विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय योगदान

युवाओं में प्रतिभा, कौशल और संस्कार की कोई कमी नहीं है, लेकिन उनकी रचनात्मक क्षमता और सकारात्मक



देने का आह्वान किया। वह दिल्ली पब्लिक स्कूल, शिमला में आईआईएमयू यूथ कनेक्ट सीरीज के तहत विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों से संवाद कर रहे थे।

राज्यपाल ने कहा कि भारतीय

ऊर्जा को सही दिशा देने की जरूरत है। उन्होंने विद्यार्थियों के सवालों के जवाब देते हुए शिक्षा, देशभक्ति, संस्कृति, अवसरों और जिम्मेदारियों से जुड़े विषयों पर विचार साझा किए।

उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल

डिग्री हासिल करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इससे चरित्र, आत्मविश्वास, सामाजिक जिम्मेदारी और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता विकसित होनी चाहिए। विद्यालय युवाओं में संस्कार और जिम्मेदार नागरिकता की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

राज्यपाल ने युवाओं से भारत के इतिहास, संस्कृति और सभ्यतागत विरासत को समझने तथा उससे प्रेरणा लेने का आग्रह किया। उन्होंने भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, खुदीराम बोस और चंद्रशेखर आजाद जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के साहस और समर्पण से प्रेरणा लेने को कहा।

उन्होंने कहा कि युवा नवाचार, उद्यमिता और रोजगार सृजन के माध्यम से आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

## राज्यपाल ने महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री को श्रद्धासुमन अर्पित किए

शिमला/शैल। राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने गांधी जयंती के अवसर पर शिमला के ऐतिहासिक रिज मैदान पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि गांधी जी के सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांत आज भी समाज और देश को प्रेरणा देते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी जी ने समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राज्यपाल ने स्वतंत्रता सेनानियों

और शहीदों को भी श्रद्धांजलि दी तथा उनके बलिदान से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। उन्होंने रिज मैदान पर महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन किया और स्वच्छता कर्मियों को हीटर वितरित किए।

इसके बाद राज्यपाल ने सीटीओ में पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को पुष्पांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि शास्त्री जी ने ईमानदारी, सादगी और नैतिकता के उच्च आदर्श स्थापित किए।

## नशा रोकने के लिए कारवाई के साथ उपचार और पुनर्वास जरूरी : राज्यपाल

शिमला/शैल। राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने कसौली में उतिष्ठ भारत सेवा ट्रस्ट की 'संकल्प रथ यात्रा' का शुभारंभ किया। उन्होंने

पुनर्वास पर भी ध्यान देना जरूरी है। उन्होंने अभिभावकों और शिक्षकों से बच्चों के व्यवहार में बदलाव पर नजर रखने तथा उनसे सकारात्मक संवाद

## राज्यपाल ने संकट मोचन हनुमान मंदिर में की पूजा - अर्चना

शिमला/शैल। राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने लेडी गवर्नर बिंदु

के लिए प्रार्थना की।

उन्होंने मंदिर परिसर का भ्रमण



गुप्ता के साथ शिमला स्थित ऐतिहासिक संकट मोचन हनुमान मंदिर में माथा टेका और पूजा - अर्चना की। उन्होंने हिमाचल प्रदेश के लोगों की सुख - समृद्धि, शांति और कल्याण

किया और इसकी समृद्ध आध्यात्मिक विरासत, शिमला की आस्था और परंपराओं से इसके गहरे जुड़ाव की जानकारी भी प्राप्त की।

राज्यपाल ने इस अवसर पर संत

बाबा नीम करौली महाराज का स्मरण किया। उनका इस पवित्र स्थल से आध्यात्मिक जुड़ाव संकट मोचन मंदिर के इतिहास और परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मंदिर की परंपरा के अनुसार, बाबा नीम करौली महाराज ने इस शांत एवं रमणीय स्थल पर कुछ समय ध्यान और साधना में बिताया था तथा यहां भगवान हनुमान को समर्पित मंदिर स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की थी। उनकी इसी प्रेरणा से बाद में मंदिर के निर्माण का कार्य शुरू किया गया और वर्ष 1966 में मंदिर में प्राण - प्रतिष्ठा की गई।

उन्होंने कहा कि संकट मोचन मंदिर जैसे आस्था के केंद्र न केवल आध्यात्मिक शांति के स्थल हैं, बल्कि हिमाचल प्रदेश की शाश्वत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं के प्रतीक भी हैं।

## छात्रा की मांग पर रचौली स्कूल भवन के लिए दो करोड़ मंजूर

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने रामपुर बुशहर

मुख्यमंत्री को बताया कि स्कूल फिलहाल दो स्थानों पर चल रहा है और एक



स्कूल में विद्यार्थियों से संवाद के दौरान रचौली वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला के भवन निर्माण के लिए दो करोड़ रुपये देने की घोषणा की। एक छात्रा ने

स्थान पर भवन निर्माण के लिए पर्याप्त भूमि उपलब्ध है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जरूरत पड़ने पर भवन निर्माण के लिए अतिरिक्त धनराशि भी दी जाएगी।

संवाद में विद्यार्थियों ने शिक्षा, पर्यटन, सामाजिक समानता, शिक्षकों की गैर - शैक्षणिक ड्यूटी और नशे सहित कई मुद्दों पर सवाल किए। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षकों को गैर - शैक्षणिक कार्यों से राहत देने के प्रयास किए जा रहे हैं। हिंदी शिक्षक की कमी का मामला उठाने पर उन्होंने अतिरिक्त शिक्षक उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया। उन्होंने विद्यार्थियों को मोबाइल का कम इस्तेमाल करने, पढ़ाई के साथ खेल और रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने की सलाह दी।

संवाद के बाद मुख्यमंत्री ने 'एंटी चिट्टा' रैली को हरी झंडी दिखाई और स्वयं भी इसमें शामिल हुए। रैली में विद्यार्थियों ने नशे के खिलाफ संदेश दिए और मुख्यमंत्री ने उन्हें नशामुक्त समाज के निर्माण की शपथ दिलाई।

## साहित्य को सेवा और राष्ट्रभक्ति से जोड़ें: राज्यपाल

शिमला/शैल। सेवा पखवाड़ा - 2026 के तहत लोक भवन और हिमाचल साहित्य एवं संस्कृति मंच के संयुक्त तत्वावधान में 'साहित्य सेवा'

लोक कल्याण और जनजागरण से भी जोड़ा गया है।

स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को याद करते हुए राज्यपाल ने कहा



काव्य गोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता राज्यपाल कविन्द्र गुप्ता ने की। इस दौरान उन्होंने हिमाचल प्रदेश के स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों को सम्मानित किया।

राज्यपाल ने कहा कि साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में संवेदना, सेवा और राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने का प्रभावी साधन है। कविता मानवीय भावनाओं और सामाजिक सरोकारों को आवाज देती है तथा लोगों को समाज और देश के लिए योगदान देने की प्रेरणा देती है।

उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान साहित्य और कविता ने लोगों में राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता की भावना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय परंपरा में साहित्य को

कि देश का निर्माण उनके साहस, त्याग और संघर्ष की नींव पर हुआ है। हिमाचल के भी अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष किया। उनके परिवारों का सम्मान वास्तव में उनके त्याग और आदर्शों का सम्मान है।

उन्होंने कहा कि 'सेवा पखवाड़ा' सेवा भावना को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का अवसर है। सेवा केवल सरकार या किसी संस्था की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हर नागरिक का सामूहिक दायित्व है।

इस अवसर पर राज्यपाल ने स्वयं भी कविता पाठ किया। कथाकार एवं कवि एस.आर. हरनोट ने उनका स्वागत किया। विधायक रणधीर शर्मा भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

## ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत करना सरकार की प्राथमिकता

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने कहा कि प्रदेश सरकार ग्रामीण क्षेत्रों की आय बढ़ाकर गांवों की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने पर विशेष ध्यान दे रही है। सरकार का प्रयास है कि किसानों, बागवानों और पशुपालकों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य मिले और इसका सीधा लाभ ग्रामीण परिवारों को हो।

रामपुर में जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस सरकार बनने के समय दूध का खरीद मूल्य 32 रुपये प्रति लीटर था, जिसे अब बढ़ाकर लगभग दोगुना कर दिया गया है। इससे पशुपालकों की आय बढ़ी है। उन्होंने कहा कि

किसानों और बागवानों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए सरकार लगातार कदम उठा रही है। मुख्यमंत्री ने बताया कि मंडी मध्यस्थता योजना के तहत सेब का खरीद मूल्य 12 से बढ़ाकर 13 रुपये प्रति किलो किया गया है। इससे बागवानों को सीधा लाभ मिलेगा।

उन्होंने कहा कि टिकर - जरोल - गाहन सड़क के निर्माण के लिए 36 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। सड़क बनने से क्षेत्र के बागवानों को सेब मंडियों तक पहुंचाने में सुविधा होगी। उन्होंने अधिकारियों को सड़क निर्माण में गुणवत्ता से समझौता न करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि किशाऊ

बांध परियोजना से हिमाचल को हर साल करीब 1,200 से 1,500 करोड़ रुपये का लाभ मिलने की उम्मीद है। इससे प्रदेश में शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य जरूरी सुविधाओं को मजबूत करने में मदद मिलेगी।

शैल समाचार  
संपादक मण्डल

संपादक - बलदेव शर्मा

संयुक्त संपादक: जे.पी. भारद्वाज

विधि सलाहकार: ऋचा शर्मा

## काशा पाट में मुख्यमंत्री का रात्रि प्रवास, स्कूल भवन के लिए दो करोड़

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने रामपुर

मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों के साथ नाटी में भी हिस्सा लिया।



विधानसभा क्षेत्र के दुर्गम गांव काशा पाट में रात्रि प्रवास किया। ग्रामीणों ने पारंपरिक वाद्य यंत्रों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मुख्यमंत्री का स्वागत किया।

मुख्यमंत्री ने काशा पाट में नए स्कूल भवन के निर्माण के लिए दो करोड़ रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने खेल मैदान विकसित करने का भी ऐलान किया। बच्चों की सुविधा के

लिए काशा पाट से तकलेच होते हुए रामपुर तक बस सेवा शुरू करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि निजी व्यक्ति बस खरीदकर सेवा शुरू करता है तो सरकार 40 प्रतिशत सब्सिडी और पांच वर्ष तक हर माह 50 हजार रुपये की सहायता देगी।

उन्होंने कहा कि दुर्गम क्षेत्रों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना सरकार की प्राथमिकता है। बिना भवन वाले महिला मंडलों को पांच-पांच लाख और पहले से भवन वाले मंडलों को सामान खरीदने के लिए एक-एक लाख रुपये देने की घोषणा की। सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली बच्चियों के उत्साहवर्धन के लिए एक लाख रुपये भी दिए। मुख्यमंत्री ने चार लोगों को होम स्टे पंजीकरण प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

## रोहड़ू को 182.87 करोड़ की 61 विकास परियोजनाओं की सौगात

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू के रोहड़ू दौर में क्षेत्र को करीब 182.87 करोड़ रुपये की

समरकोट में सब-तहसील खेलने की घोषणा भी की गई। स्वास्थ्य क्षेत्र में संदासू को सिविल



61 विकास परियोजनाओं की सौगात मिली। मुख्यमंत्री ने चिड़गांव में कई परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास किए। इनमें सड़क, पेयजल, सिंचाई, स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़ी योजनाएं शामिल हैं। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं के पूरा होने से क्षेत्र में बुनियादी सुविधाएं मजबूत होंगी और ग्रामीण क्षेत्रों को बेहतर संपर्क मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने रोहड़ू के राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के नए भवन के लिए छात्रा की मांग पर दो करोड़ रुपये देने की घोषणा की। जरूरत पड़ने पर अतिरिक्त धनराशि देने का भी आश्वासन दिया। उन्होंने जांगला और चिड़गांव के स्कूलों को सीबीएसई स्कूल बनाने तथा सरकारी स्कूलों में आधुनिक शिक्षा सुविधाएं बढ़ाने की बात कही। चिड़गांव में एसडीएम कार्यालय खेलने के लिए सर्वे और

अस्पताल का दर्जा देने के साथ रोहड़ू अस्पताल में 25 करोड़ रुपये की लागत से 50 बिस्तरों वाले क्रिटिकल केयर

## जांगलिक सड़क दस दिन में खुलेगी पुल के लिए चार करोड़ अतिरिक्त

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने रोहड़ू के तांगणू-जांगलिक क्षेत्र का दौरा कर भूस्खलन से बंद जांगलिक सड़क का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को सड़क को दस दिन के भीतर यातायात के लिए बहाल करने के निर्देश दिए। सड़क बंद होने से स्थानीय लोगों और बागवानों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन जांगलिक पुल का काम पूरा करने के

लिए चार करोड़ रुपये की अतिरिक्त धनराशि देने की घोषणा की। इसके अलावा थैंटवाड़ी गांव में भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र के लिए दो करोड़ रुपये उपलब्ध करवाने का ऐलान किया। उन्होंने अधिकारियों को राहत और पुनर्बाहली कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार आपदा प्रभावित क्षेत्रों में जनजीवन सामान्य बनाने और प्रभावित लोगों को आवश्यक राहत उपलब्ध करवाने के लिए प्रतिबद्ध है।

## जापान की खेल व्यवस्था समझने टोक्यो पहुंचा हिमाचल का प्रतिनिधिमंडल

शिमला/शैल। युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री यादविन्द्र गोमा के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश के छह सदस्यीय

प्रतिनिधिमंडल में उप-मुख्य सचेतक केवल सिंह पठानिया, विधायक कमलेश ठाकुर और विवेक शर्मा, सचिव



प्रतिनिधिमंडल ने जापान की अध्ययन एवं अनुभव यात्रा के दौरान टोक्यो स्थित जापान ओलंपिक संग्रहालय का दौरा किया। यह यात्रा आइची-नागोया 2026 एशियाई खेलों के संदर्भ में की जा रही है।

प्रियंका बासू इंग्टी तथा युवा सेवाएं एवं खेल विभाग के निदेशक शिवम प्रताप सिंह शामिल हैं।

प्रतिनिधिमंडल ने जापान स्पोर्ट्स ओलंपिक स्क्वायर स्थित संग्रहालय में ओलंपिक खेलों के इतिहास, विकास

और जापान के खेलों में योगदान की जानकारी हासिल की। मल्टीमीडिया प्रदर्शियों और इंटरैक्टिव माध्यमों के जरिए यह भी समझा गया कि जापान किस तरह खेल संस्कृति को बढ़ावा देता है और युवाओं को खेलों से जोड़ता है।

यादविन्द्र गोमा ने कहा कि यात्रा का उद्देश्य जापान की खेल व्यवस्था, खिलाड़ियों के विकास, खेल अधोसंरचना, तकनीक और खेल आयोजनों के बेहतर प्रबंधन से जुड़े अनुभव हासिल करना है। उन्होंने कहा कि आइची-नागोया 2026 एशियाई खेलों में खिलाड़ी-केंद्रित व्यवस्था, मौजूदा खेल सुविधाओं के प्रभावी इस्तेमाल और खेल संस्कृति को बढ़ावा देने पर जोर दिया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि जापान से मिले अनुभव हिमाचल में खेल प्रशसन को मजबूत करने, प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने और युवाओं की खेलों में भागीदारी बढ़ाने में उपयोगी होंगे।

## 1,471 श्रमिकों को 5.78 करोड़ की वित्तीय सहायता

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने रामपुर के

किए गए। मुख्यमंत्री आवास योजना में विधवा, एकल, निराश्रित और दिव्यांग



नोगली में हिमाचल प्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कामगार कल्याण बोर्ड के माध्यम से 1,471 पंजीकृत श्रमिकों और उनके आश्रितों को 5.78 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की। यह राशि शिक्षा, विवाह, आवास, मातृत्व-पितृत्व, दुर्घटना, दिव्यांगता और अन्य कल्याणकारी योजनाओं के तहत दी गई।

शिक्षा सहायता योजना के तहत 968 लाभार्थियों को 2.74 करोड़ रुपये और विवाह सहायता के लिए 359 लाभार्थियों को 1.83 करोड़ रुपये प्रदान

महिलाओं को 45.95 लाख रुपये की सहायता दी गई। दुर्घटना मृत्यु एवं अंतिम संस्कार सहायता के 21 मामलों में 54.20 लाख रुपये, मातृत्व-पितृत्व लाभ के 30 मामलों में 7.14 लाख रुपये और बालिका जन्म उपहार योजना के तहत 15 परिवारों को 7.65 लाख रुपये दिए गए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि श्रमिक कल्याण योजनाओं की प्रक्रिया को डिजिटल और सरल बनाया गया है, ताकि पात्र परिवारों को सहायता सीधे और पारदर्शी तरीके से मिल सके।

## मुख्यमंत्री ने महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित की

शिमला/शैल। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री ठाकुर

अमूल्य योगदान को याद करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि उनके आदर्श और सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान पीढ़ी को इन



सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने रोहड़ू विधानसभा क्षेत्र के भटवाड़ी गांव में पुष्पांजलि अर्पित की।

महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री के राष्ट्र निर्माण में दिए गए

दोनों महान नेताओं द्वारा दिखाए गए सत्य, अहिंसा, सादगी, कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्रसेवा के मार्ग पर चलना चाहिए।

रोहड़ू विधानसभा क्षेत्र के दो दिवसीय प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री ने 'सरकार गांव के द्वार' कार्यक्रम के तहत

भटवाड़ी गांव में रात्रि प्रवास किया था। इस अवसर पर रोहड़ू के विधायक मोहन लाल ब्राक्टा तथा अन्य गणमान्यों ने भी महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री को पुष्पांजलि अर्पित की।

## तकलेच स्कूल को सीबीएसई का दर्जा देने की घोषणा

शिमला/शैल। रामपुर विधानसभा क्षेत्र के तकलेच पहुंचने पर मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू का स्थानीय लोगों ने पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ स्वागत किया।

सरकारी क्षेत्र में सीबीएसई स्कूल शुरू कर रही है, ताकि ग्रामीण बच्चों को घर के नजदीक बेहतर शिक्षा मिल सके। इससे अभिभावकों का खर्च कम होगा और गांवों से पलायन रोकने में भी मदद मिलेगी।



लोगों ने कतारों में खड़े होकर मुख्यमंत्री का अभिनंदन किया। इस दौरान विभिन्न स्थानीय प्रतिनिधिमंडलों ने भी मुख्यमंत्री को सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री ने तकलेच स्कूल को सीबीएसई के तहत लाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को सीबीएसई की शिक्षा दिलाने के लिए अभिभावकों को उन्हें शहरों में भेजना पड़ता है। इससे परिवारों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ता है और गांवों से पलायन भी बढ़ता है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार

बाद जरूरी प्रक्रिया पूरी कर बस स्टैंड का निर्माण किया जाएगा। स्थानीय लोगों की मांग पर विभिन्न संपर्क मार्गों के लिए पर्याप्त धनराशि उपलब्ध करवाने का भी आश्वासन दिया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क और अन्य जरूरी सुविधाओं को मजबूत करना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने तकलेच सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण कर क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए।

कायर प्रेम प्रदर्शित करने में असमर्थ है, यह बहादुर का विशेषाधिकार है।  
.....महात्मा गांधी

## सम्पादकीय

# सरकार पर भारी पड़ेंगे चुनाव आयोग पर उठते सवाल



समय ईवीएम मशीनों की विश्वसनीयता पर श्री लाल कृष्ण आडवाणी की अध्यक्षता में उठे सवाल आज मुख्य चुनाव आयुक्त और उनके सहयोगी की आयुक्तों के गिरेबान तक पहुंच गये हैं। कभी यह बहस ईवीएम की विश्वसनीयता तक सीमित थी। आज सवाल ईवीएम से आगे बढ़कर मतदाता सूची, वोट चोरी के आरोप, विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) और चुनाव आयोग की स्वतंत्रता तक पहुंच गया है। जब करोड़ों मतदाताओं के मतदान अधिकार को लेकर आशंका व्यक्त की जा रही

हो और चुनावी प्रक्रिया पर ही अविश्वास बढ़ रहा हो, तब इसे सामान्य राजनीतिक विवाद मानकर टालना लोकतंत्र के लिए गंभीर भूल होगी।

ईवीएम को लेकर 18 लाख मशीनों के कथित रूप से गायब होने जैसे दावे भी सार्वजनिक बहस में आये हैं। मतदाता सूची का एसआईआर भी इसी कारण संवेदनशील विषय है। चुनाव आयोग की स्वतंत्रता का प्रश्न भी यहीं खड़ा होता है। चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति और जवाबदेही से जुड़े प्रावधानों को लेकर पहले से राजनीतिक विवाद है। चुनाव आयोग सरकार के अधीन कोई विभाग नहीं, संविधान के तहत स्थापित स्वतंत्र संस्था है। चुनाव आयोग की ताकत उसके अधिकारों में नहीं, उसकी निष्पक्षता में है। सरकार से यह सीधा सवाल पूछा जाना चाहिए कि ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता क्यों पड़ी जिसने चुनाव आयोग की स्वतंत्रता पर ही बहस खड़ी कर दी? यदि संस्था पूरी तरह स्वतंत्र है तो उसे अपनी स्वतंत्रता साबित करने में संकोच क्यों होना चाहिए?

यह अविश्वास अचानक पैदा नहीं हुआ। पिछले वर्षों में सत्ता की कार्यप्रणाली को लेकर लगातार सवाल उठते रहे हैं। विपक्ष ने आरोप लगाया कि ईडी, सीबीआई और आयकर विभाग जैसी केंद्रीय एजेंसियों का राजनीतिक इस्तेमाल हुआ। सत्ता पक्ष ने इन आरोपों को खारिज किया। लेकिन जनता के सामने एक विचित्र राजनीतिक तस्वीर जरूर बनी जिन नेताओं को कभी भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई का चेहरा बनाकर पेश किया गया, उनमें से कई बाद में सत्ता पक्ष के साथ खड़े दिखाई दिए। सवाल यह है कि क्या भ्रष्टाचार की परिभाषा भी राजनीतिक सुविधा के अनुसार बदल जाती है? यदि कोई नेता सत्ता के बाहर रहते हुए भ्रष्ट है तो सत्ता के साथ आते ही पाक-साफ कैसे हो जाता है? यदि जांच एजेंसियां वास्तव में स्वतंत्र हैं तो उनकी कारवाई का राजनीतिक समय और राजनीतिक परिणाम इतने सवाल क्यों पैदा करते हैं? इन सवालों का जवाब सत्ता को देना होगा।

इसी तरह रोजगार का सवाल है। दो करोड़ रोजगार प्रतिवर्ष देने का वादा युवाओं की उम्मीदों का बड़ा आधार था। लेकिन आज लाखों युवा प्रतियोगी परीक्षाओं, अस्थायी नौकरियों और बेरोजगारी के बीच अपना भविष्य तलाश रहे हैं। शिक्षा, जो कभी सामाजिक बराबरी का सबसे मजबूत हथियार थी, आज लगातार महंगी होती जा रही है। परीक्षा व्यवस्थाओं में प्रश्नपत्र लीक जैसी घटनाओं ने युवाओं का भरोसा तोड़ा है। जिस युवा ने वर्षों मेहनत करके परीक्षा की तैयारी की, उसके लिए प्रश्नपत्र लीक होना केवल एक परीक्षा का संकट नहीं, बल्कि उसके पूरे भविष्य के साथ खिलवाड़ है।

देश की अर्थव्यवस्था को लेकर भी सवाल हैं। कर्ज बढ़ता गया। लेकिन जनता पूछ रही है कि बढ़ते कर्ज का लाभ उसके जीवन में कितना दिखाई दे रहा है? रोजगार कहां है? शिक्षा सस्ती क्यों नहीं हुई? स्वास्थ्य व्यवस्था पर खर्च क्यों पर्याप्त नहीं है? आम परिवार की आय और खर्च के बीच अंतर क्यों बढ़ रहा है? दूसरी ओर बड़े उद्योग समूहों को मिली कर्ज राहत और बटुटे खाते में डाली गई रकम को लेकर विपक्ष के सवालों का उत्तर सार्वजनिक होना चाहिए।

युवा पीढ़ी इन तमाम सवालों को जोड़कर देख रही है। उसे महंगी शिक्षा, सीमित रोजगार, परीक्षा व्यवस्थाओं की खामियां और संस्थाओं की स्वतंत्रता पर उठते सवाल एक ही तस्वीर का हिस्सा दिखाई देते हैं। व्यावसायिक शिक्षा का बढ़ता बाजारीकरण भी इसी असुरक्षा को बढ़ाता है। जब शिक्षा हासिल करना महंगा हो और उसके बाद रोजगार की गारंटी न हो तो असंतोष स्वाभाविक है।

इसी पृष्ठभूमि में चुनाव आयोग आज राजनीतिक बहस के केंद्र में है। लोकतंत्र में असहमति को दबाने के बजाय उसके कारणों का जवाब देना पड़ता है। बल प्रयोग इसका विकल्प नहीं है। सरकार यदि इस असंतोष को दबाने के लिए बल प्रयोग का रास्ता अपनाने की सोच रही है तो उसे यह समझ लेना चाहिए कि आज स्थिति उस सीमा से आगे निकल चुकी है। पुलिस की ताकत से भीड़ हटाई जा सकती है, लेकिन सवाल नहीं हटाए जा सकते। गिरफ्तारियों से आवाज कुछ समय के लिए धीमी की जा सकती है, लेकिन विश्वास वापस नहीं लाया जा सकता। लोकतंत्र में असहमति को कुचलना आग बुझाना नहीं, उसे भीतर दबाना है। इसलिए आज सत्ता को यह तय करना होगा कि वह असंतोष को दबाने का रास्ता चुनेगी या अविश्वास दूर करने का।

नई पीढ़ी के सामने अपना भविष्य है। वह देख रही है कि शिक्षा महंगी है, रोजगार सीमित है, प्रतियोगी परीक्षाएं विवादों में हैं और राजनीतिक व्यवस्था में संस्थाओं की स्वतंत्रता पर सवाल उठ रहे हैं। इसलिए उसका असंतोष केवल किसी सरकार के खिलाफ नहीं है। यह उस पूरी व्यवस्था के खिलाफ है जिसमें उसे अपना भविष्य असुरक्षित दिखाई दे रहा है। यही कारण है कि आज चुनाव आयोग पर सवाल उठना केवल विपक्ष की राजनीतिक रणनीति मानकर खारिज करना आत्मघाती भूल होगी।

# फ्लाईडुबई हादसा : एक व्यक्ति का अपराध पूरे धार्मिक समाज की कसौटी नहीं हो सकती



गौतम चौधरी

कभी-कभी किसी घटना को लेकर हम खुद के चिंतन के आधार पर अपराधी ढूंढ लेते हैं लेकिन वास्तविक चित्र कुछ और होता है। आज के सोशल मीडिया युग में यह प्रक्रिया इतनी तेज हो गयी है कि कल्पना और परिकल्पना साफ तौर पर दिखने लगता है। ऐसे में तथ्य और सत्य का घालमेल बेहद खतरनाक स्थिति तक पहुंच जाता है। ऐसा ही कुछ हाल के दिनों में कई घटनाओं में देखा गया है। अभी अभी 30 सितंबर 2026 को दुबई से तेल अवीव जा रही फ्लाईडुबई की उड़ान FZ1073 में हुई घटना के बाद कुछ ऐसा ही माहौल बनाया जा रहा है। अस घटना ने विमानन सुरक्षा के साथ-साथ एक गंभीर सामाजिक प्रश्न भी खड़ा कर दिया है। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार भारतीय मूल के कप्तान स्मित मच्छर और उनके ओमानी सह-पायलट हमाम अल-हम्मामी के बीच कॉकपिट में गंभीर झड़प हुई। इस दौरान विमान अचानक हजारों फीट नीचे गया। घायल कप्तान ने स्थिति संभालने की कोशिश की और यात्रियों तथा चालक दल की मदद से विमान को सुरक्षित रूप से सऊदी अरब के तबूक में उतारा गया।

घटना की अंतरराष्ट्रीय जांच अभी जारी है। इसलिए इसके अंतिम कारण और उद्देश्य के बारे में निष्कर्ष निकालने में जल्दबाजी उचित नहीं होगी। फिर भी इस घटना से जुड़े कुछ तथ्य ऐसे हैं जिन पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि “एक व्यक्ति के कथित अपराध को उसके धर्म से जोड़कर पूरे समुदाय को कठघरे में खड़ा करना क्या उचित है?”

रिपोर्टों में सामने आया है कि सह-पायलट के बारे में 2024 में सुरक्षा संबंधी गंभीर चिंता सामने आई थी। अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से प्रकाशित रिपोर्टों में कहा गया कि Oman Air में प्रशिक्षण के दौरान उसके पास कथित रूप से चरमपंथी सामग्री मिली थी और उसे कुछ समय के लिए उड़ान से अलग किया गया था। इसके बाद वह अलग-अलग विमानन संस्थाओं से जुड़ा और अंततः फ्लाईडुबई में सह-पायलट के रूप में काम करने लगा।

यदि जांच में यह जानकारी सही साबित होती है तो सबसे बड़ा सवाल यह होना चाहिए कि “अंतरराष्ट्रीय विमानन व्यवस्था में सुरक्षा संबंधी ऐसी सूचना आगे कैसे पहुंचती है और उसकी पुष्टि कैसे होती है?” यदि किसी पायलट के बारे में पहले गंभीर सुरक्षा चिंता दर्ज हो चुकी हो तो अगली एयरलाइन उसकी पृष्ठभूमि की जांच किस स्तर तक करती है?

क्या विभिन्न देशों की विमानन कंपनियों और नियामक संस्थाओं के बीच सुरक्षा संबंधी जानकारी साझा करने की पर्याप्त व्यवस्था है? क्या पायलट की पेशेवर योग्यता की जांच के साथ उसकी सुरक्षा पृष्ठभूमि की भी प्रभावी जांच होती है? ये प्रश्न किसी धर्म से संबंधित नहीं हैं। ये सीधे-सीधे “विमानन सुरक्षा और यात्रियों के जीवन” से संबंधित हैं।

यदि जांच यह प्रमाणित करती है कि हमला किसी कट्टरपंथी विचारधारा से प्रेरित था तो उस विचारधारा की कठोर आलोचना होनी चाहिए। धार्मिक कट्टरता, आतंकवाद और हिंसक चरमपंथ के प्रति किसी प्रकार की नरमी लोकतांत्रिक समाज के हित में नहीं है। मगर यहां एक बुनियादी अंतर समझना जरूरी है। “किसी चरमपंथी विचारधारा की आलोचना और पूरे धर्म की निंदा एक ही बात नहीं है।”

एक मुस्लिम व्यक्ति अपराध करता है तो उसका अपराध उसके व्यक्तिगत तथ्य और प्रमाणित विचारधारा के आधार पर तय होना चाहिए। उसी कसौटी पर हिंदू, ईसाई, सिख, बौद्ध या किसी अन्य धर्म के व्यक्ति को भी देखा जाना चाहिए। कानून व्यक्ति के अपराध को देखता है, उसकी पूरी धार्मिक आबादी को नहीं। यही सिद्धांत आतंकवाद से लड़ाई को भी मजबूत करता है। क्योंकि आतंकवाद के वास्तविक स्रोत की पहचान तभी संभव है जब जांच धार्मिक पहचान और आपराधिक व्यवहार के बीच फर्क कर सके।

इस घटना में भारतीय कप्तान स्मित मच्छर की भूमिका निस्संदेह महत्वपूर्ण है। संकट की स्थिति में उन्होंने विमान को संभालने और यात्रियों की जान बचाने का प्रयास किया। ऐसी स्थिति में उनके साहस और पेशेवर जिम्मेदारी की सराहना होनी चाहिए। मगर उनकी वीरता को किसी दूसरे धर्म के विरुद्ध तर्क में बदलना उचित नहीं होगा।

किसी व्यक्ति की वीरता का मूल्य उसके धर्म से नहीं, उसके कर्म से तय होता है। यदि एक व्यक्ति संकट में सैकड़ों लोगों की जान बचाता है तो वह अपने कर्म के कारण सम्मान का अधिकारी है। उसी तरह यदि कोई व्यक्ति अपराध करता है तो उसे अपने अपराध के लिए कानून के सामने जवाब देना होगा। “वीरता को धर्म की राजनीति से मुक्त रखना ही उस वीरता का सम्मान है।”

इस घटना के बाद सोशल मीडिया पर जिस प्रकार धार्मिक पहचान को केंद्र में रखकर प्रतिक्रियाएं सामने आईं, उससे एक और खतरा दिखाई देता है। किसी अंतरराष्ट्रीय घटना को कुछ ही घंटों में भारत के हिंदू-मुस्लिम विवाद में बदल देना न तो न्याय है और न पत्रकारिता की नैतिकता। सोशल मीडिया पर भावनाएं तेजी से फैलती हैं, जबकि जांच समय लेती है।

किसी व्यक्ति के बारे में यह कहना कि वह कट्टरपंथी था, आतंकवादी था या उसने किसी विशेष विचारधारा के कारण हमला किया, इन सबके लिए प्रमाण आवश्यक हैं। जांच पूरी होने से पहले अनुमान को निष्कर्ष बना देना समाज में अविश्वास पैदा कर सकता है। इसलिए मीडिया और सोशल मीडिया

दोनों के लिए एक सामान्य नियम होना चाहिए - “पहले तथ्य, फिर विश्लेषण और अंत में निष्कर्ष।”

इस घटना को केवल धार्मिक बहस में समाप्त कर देने के बजाये इससे कुछ ठोस सुरक्षा सुधारों पर चर्चा होनी चाहिए। “पहला”, अंतरराष्ट्रीय एयरलाइनों के बीच पायलटों की सुरक्षा संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी साझा करने की व्यवस्था अधिक प्रभावी होनी चाहिए। “दूसरा”, किसी पायलट के पिछले रोजगार और लाइसेंस इतिहास के साथ सुरक्षा संबंधी गंभीर रिकॉर्ड की भी उचित कानूनी प्रक्रिया के तहत जांच होनी चाहिए। “तीसरा”, मानसिक स्वास्थ्य, हिंसक चरमपंथ और सुरक्षा जोखिम जैसे संवेदनशील विषयों की जांच वैज्ञानिक तथा कानूनी मानकों के आधार पर होनी चाहिए। केवल किसी धार्मिक या राजनीतिक पहचान को सुरक्षा जोखिम मान लेना न तो न्यायसंगत है और न व्यावहारिक। “चौथा”, विमान के कॉकपिट की सुरक्षा व्यवस्था, आपातकालीन प्रोटोकॉल और चालक दल के बीच ऐसी स्थिति से निपटने की क्षमता की समीक्षा होनी चाहिए। “पांचवां”, यदि किसी पायलट के बारे में पहले गंभीर सुरक्षा चेतावनी मौजूद थी तो यह पता लगाया जाना चाहिए कि सूचना प्रणाली में वह चेतावनी कहां कमजोर पड़ी।

यही जांच भविष्य में किसी बड़ी विमान दुर्घटना या आतंकवादी घटना को रोकने में वास्तविक योगदान दे सकती है। पूरे मामले का संतुलित निष्कर्ष यही होना चाहिए कि यदि सह-पायलट ने अपराध किया है तो उसे कानून के अनुसार कठोर दंड मिलना चाहिए। यदि उसके पीछे हिंसक चरमपंथी विचारधारा प्रमाणित होती है तो उस विचारधारा की भी स्पष्ट आलोचना होनी चाहिए। मगर एक अपराधी के कारण किसी पूरे धर्म के करोड़ों अनुयायियों को संदेह की दृष्टि से देखना न्याय का विस्तार नहीं, “सामूहिक दोषारोपण” है।

भारत जैसे बहुधार्मिक समाज में इसकी कीमत बहुत बड़ी हो सकती है। इससे निर्दोष लोगों के प्रति अविश्वास बढ़ता है, सामाजिक तनाव पैदा होता है और वास्तविक सुरक्षा प्रश्न पीछे छूट जाते हैं। आतंकवाद और धार्मिक चरमपंथ का मुकाबला मजबूत कानून, सक्षम सुरक्षा व्यवस्था, बेहतर सूचना-साझाकरण और सामाजिक विवेक से किया जा सकता है। किसी पूरे धर्म को अपराधी बनाकर नहीं।

स्मित मच्छर की वीरता को सलाम कीजिए। हमाम अल-हम्मामी के कथित अपराध की निष्पक्ष जांच कीजिए। यदि किसी हिंसक चरमपंथी विचारधारा की भूमिका प्रमाणित होती है तो उसका दृढ़ता से विरोध कीजिए। मगर इस पूरे मामले में एक सीमा भी स्पष्ट रखिए - “आरोपी के अपराध की जांच कीजिए, उसकी प्रमाणित विचारधारा की जांच कीजिए, सुरक्षा व्यवस्था की विफलता की जांच कीजिए। उसके धर्म को कटघरे में मत खड़ा कीजिए।”

यही न्याय का रास्ता है और यही भारत जैसे बहुलतावादी समाज की सामाजिक सुरक्षा भी।

# नेक्स्ट - जेनरेशन जीएसटी और भारत के विकास का अगला चरण



— श्रीमती निर्मला सीतारमण—  
केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट कार्य मंत्री

“विकसित भारत” बनने के भारत के संकल्प के लिए एक ऐसी अर्थव्यवस्था की आवश्यकता है जिसमें हर स्तर और आकार के उद्यम फल-फूल सकें, चाहे उनकी शुरुआत कहीं से भी हुई हो। पिछले बारह वर्षों में हमारी सरकार ने इन अनुकूल परिस्थितियों के निर्माण के लिए निरंतर कार्य किया है। वर्ष 2017 में जीएसटी (वस्तु एवं सेवा कर) लागू होने से अप्रत्यक्ष कराधान के लिए एक साझा राष्ट्रीय ढांचा स्थापित हुआ। “नेक्स्ट - जेनरेशन का जीएसटी” (Next-Gen GST) नौ वर्षों के क्रियान्वयन तथा करदाताओं और राज्यों के अनुभवों के आधार पर इसी प्रयास को आगे बढ़ाता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण के अनुरूप, नेक्स्ट - जेनरेशन जीएसटी की परिकल्पना दो परस्पर जुड़े उद्देश्यों के साथ की गई थी: कर दरों को कम व तर्कसंगत बनाना और अनुपालन को अधिक सरल बनाना। दरों में किए गए संशोधन 22 सितंबर 2025 से प्रभावी हुए। प्रक्रियात्मक सुधारों का अगला चरण शीघ्र ही जीएसटी परिषद के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। सम्मिलित रूप से, इन प्रयासों का उद्देश्य परिवारों को राहत देना, व्यवसायों को अधिक निश्चितता प्रदान करना और करदाताओं के लिए एक ऐसी प्रणाली सुनिश्चित करना है जिसमें वे बिना किसी अनावश्यक कठिनाई के अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकें।

राज्य इस पूरी यात्रा में बराबर के साझेदार रहे हैं। वे परिषद में अपनी प्राथमिकताओं और अनुभवों को लेकर आए, निर्णयों को आकार देने में सहयोग किया और उनके क्रियान्वयन का दायित्व संभाला। मैं इस प्रतिबद्धता के लिए उनका आभार व्यक्त करती हूँ। जीएसटी की प्रगति प्रत्येक सरकार के उत्तरदायित्वों का सम्मान करते हुए एक साझा राष्ट्रीय लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ने की इसी तत्परता पर टिकी है।

इसके परिणाम विश्वास को सुदृढ़ करते हैं। अक्टूबर 2025 से जुलाई 2026 के बीच, दर्ज की गई कर-योग्य आपूर्ति के मूल्य में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 25.8% की वृद्धि हुई।

कर दरों की हल्की संरचना के साथ-साथ दर्ज आर्थिक गतिविधियों में भी व्यापक विस्तार देखा गया है। यह उस सुधार के लिए एक अत्यंत उत्साहवर्धक आधार है जिसका उद्देश्य उद्यमों और सार्वजनिक वित्त दोनों को संबल प्रदान करना है।

यह सुदृढ़ता हालिया राजस्व आंकड़ों में स्पष्ट दिखाई देती है। अप्रैल-सितंबर 2026 के दौरान सकल जीएसटी संग्रह 12.46 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि से 11.6% अधिक है। जून से सितंबर तक के प्रत्येक महीने में वार्षिक आधार पर दोहरे अंकों में वृद्धि दर्ज की गई, इन चार महीनों का कुल संग्रह मिलकर लगभग 15% की गति से बढ़ा। कर वापसी (रिफंड) के बाद शुद्ध संग्रह में भी इस छमाही के दौरान 10.4% की वृद्धि हुई। इस प्रकार,

करदाताओं को दी गई राहत और विकास के लिए उपलब्ध संसाधनों में वृद्धि साथ-साथ हुई है।

इस विस्तार का दायरा उसके पैमाने जितना ही महत्वपूर्ण है। सभी 11 क्षेत्रक समूहों और सभी प्रमुख राज्यों में दर्ज कर-योग्य आपूर्ति में वृद्धि देखी गई। भारत जैसी विविध अर्थव्यवस्था में यह व्यापक प्रसार अत्यंत महत्वपूर्ण है। विभिन्न क्षेत्रों और भौगोलिक हिस्सों में होने वाली यह वृद्धि अधिक से अधिक व्यवसायों को विस्तार लेते बाजारों में भाग लेने का अवसर देती है, और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न मांग, निवेश तथा रोजगार से अधिकाधिक समुदायों को लाभान्वित करती है।

सुधार के बाद की अवधि की तुलना में उपभोक्ताओं को दी गई प्रत्यक्ष बिक्री (बी2सी) में भी 26.7% की बढ़ोतरी हुई। जब कर राहत का प्रभाव कीमतों में दिखाई देता है, तो परिवारों के पास अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने या बचत करने के लिए अधिक गुंजाइश होती है। उपभोक्ता राहत और उद्यम विकास आपस में गहराई से जुड़े हैं: परिवारों की क्रय शक्ति व्यवसायों द्वारा दी जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं की मांग को बनाए रखती है। इसका लाभ परिवार से लेकर खुदरा विक्रेता, आपूर्तिकर्ता और उत्पादक तक सभी तक पहुंचता है।

लघु और मध्यम उद्यमों के लिए एक राष्ट्रीय बाजार तभी सार्थक होता है जब वह उनके स्थानीय परिवेश से परे ग्राहकों तक पहुंचने का व्यावहारिक मार्ग प्रशस्त करे।

## डिजिटल प्रौद्योगिकी और एआई से

हिमाचल प्रदेश डिजिटल गवर्नेंस और नागरिक सेवाओं के वितरण के क्षेत्र में तेजी से बदलाव की ओर अग्रसर है। राज्य सरकार ने डिजिटल प्रौद्योगिकी आधारित सुधारों और पहलों को लागू करते हुए प्रदेश को डिजिटल गवर्नेंस के क्षेत्र में अग्रणी बनाने की दिशा में तेजी से कदम बढ़ाए हैं। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू के नेतृत्व में शुरू किए गए इन सुधारों का उद्देश्य प्रशासनिक प्रक्रियाओं में दक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना है।

नई डिजिटल व्यवस्थाओं और मौजूदा प्रणालियों में किए गए सुधारों के परिणामस्वरूप सरकारी अधिकारी, कर्मचारी और विभाग अब महत्वपूर्ण प्रशासनिक कार्यों को पहले की अपेक्षा अधिक तेज, व्यवस्थित और प्रभावी तरीके से संचालित कर पा रहे हैं।

ई-ऑफिस ने राज्य में कागज रहित प्रशासन के एक नए युग की शुरुआत की है। इसके माध्यम से सरकारी आंतरिक प्रक्रियाओं का स्वचालन, कागज के उपयोग में कमी, पारदर्शिता में वृद्धि और प्रशासनिक कार्यप्रणाली की समग्र दक्षता में सुधार सुनिश्चित किया जा रहा है। ई-ऑफिस प्लेटफॉर्म में दस्तावेज प्रबंधन (ई-फाइल), ई-फाइल ट्रैकिंग, ई-साइन और वर्कफ्लो ऑटोमेशन जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

वर्तमान में राज्य के करीब 900 कार्यालय ई-ऑफिस से जुड़े चुके हैं। इनमें सचिवालय के 108, निदेशालयों के 98, पुलिस अधीक्षक कार्यालयों के 15, उपायुक्त कार्यालयों के 12, एसडीएम कार्यालयों के 74, बीडीओ कार्यालयों के 88 और 491 फील्ड कार्यालय शामिल हैं।

द्वितीय और तृतीय श्रेणी के शहरों के व्यवसायों को स्थानीय स्तर पर निवेश और रोजगार जारी रखते हुए ऐसे संबंध बनाने में सक्षम होना चाहिए। वहीं दूसरी ओर, इन शहरों में विस्तार करने वाले उद्यम स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं और वितरकों के लिए नए अवसर सृजित कर सकते हैं।

जीएसटी का साझा ढांचा इन कड़ियों को सुदृढ़ करता है, और सरल प्रशासनिक व्यवस्था को इन्हें बनाए रखना और भी सहज बनाना होगा।

इस व्यवस्था में सहभागिता अत्यंत व्यापक रही है। अगस्त के अंत तक केंद्र और राज्य क्षेत्राधिकारों के अंतर्गत कुल जीएसटी पंजीकरण लगभग 1.71 करोड़ तक पहुंच गए, जो एक वर्ष पहले की तुलना में लगभग 15% अधिक हैं। अप्रैल-जुलाई 2026 की कर अवधियों के लिए, निर्धारित तिथि तक दाखिल किए गए जीएसटीआर-3बी रिटर्न पिछले वर्ष की समान अवधियों की तुलना में 12.6% अधिक थे। ये सुधार प्रशासन पर एक समान दायित्व भी डालते हैं:

नियमित अनुपालन को विश्वसनीय सेवा, स्पष्ट मार्गदर्शन और समस्याओं के समयबद्ध समाधान द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए। इनपुट टैक्स क्रेडिट (ITC) की कार्यप्रणाली इस अनुभव का एक अन्य महत्वपूर्ण हिस्सा है।

सुधार-उपरांत आंकड़े दर्शाते हैं कि इनपुट टैक्स क्रेडिट के माध्यम से चुकाई गई कर देयता का अनुपात बढ़ा है, जबकि कर-योग्य आपूर्ति के सापेक्ष संचित क्रेडिट में कमी आई है। यह उन व्यवसायों के लिए उत्साहवर्धक है जो पात्र क्रेडिट के प्रभावी उपयोग पर निर्भर करते हैं। किसी छोटे उद्यम के लिए उसकी कार्यशील पूंजी ही यह तय करती है कि वह कितनी

सुगमता से कच्चा माल खरीद सकता है, कोई ऑर्डर पूरा कर सकता है और अगला काम हाथ में ले सकता है।

कर वापसी (रिफंड) भी उतनी ही प्रासंगिक है। अप्रैल-सितंबर के दौरान लगभग 1.80 लाख करोड़ रुपये की धनराशि रिफंड के रूप में लौटाई गई। व्यवसायों के प्राप्य बकाये को वापस लौटाना एक सुव्यवस्थित कर प्रणाली का अनिवार्य अंग है। इस प्रक्रिया में अधिक निश्चितता और पूर्वानुमेयता उद्यमों को अधिक आत्मविश्वास के साथ खरीद और उत्पादन की योजना बनाने में सहायता करेगी। किसी करदाता को देय रिफंड प्राप्त होने का अनुभव प्रशासनिक दक्षता का एक प्रमुख पैमाना होता है।

राज्यों की राजस्व स्थिति भी अधिक सुदृढ़ हुई है। इस वर्ष अप्रैल-सितंबर के दौरान एकीकृत माल और सेवा कर (आईजीएसटी) निपटान में उनके हिस्से सहित राज्यों की कुल एसजीएसटी प्राप्तियों में लगभग 16% की वृद्धि हुई। ये संसाधन बुनियादी ढांचे और सार्वजनिक सेवाओं में निवेश को गति प्रदान करते हैं, जिससे परिवारों और उद्यमों को अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए बेहतर परिवेश मिलता है। इस प्रकार, ये लाभ एक-दूसरे को सशक्त बनाते हैं: परिवारों को मिलने वाली राहत मांग को बढ़ावा देती है, उद्यम आर्थिक गतिविधियों को सुदृढ़ करते हैं, और सार्वजनिक राजस्व विकास को निरंतर बनाए रखने में सहायक होता है।

यह अनुभव भविष्य में किए जाने वाले कार्यों को भी रेखांकित करता है। एक विकासशील प्रणाली को इस बात के प्रति सचेत रहना चाहिए कि छोटे प्रतिभागियों पर इसका कितना आर्थिक व समय संबंधी भार

## बदल रहा हिमाचल का शासन तंत्र

की जा रही है।

सरकार द्वारा हिमसेवा 2.0 भी विकसित किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य विभिन्न सेवाओं को और अधिक एकीकृत, सरल, कुशल तथा नागरिक-अनुकूल बनाना है।

वार्षिक प्रदर्शन मूल्यांकन रिपोर्ट पोर्टल अधिकारियों और कर्मचारियों के प्रदर्शन मूल्यांकन तथा वार्षिक कार्य योजना की प्रक्रिया को डिजिटल रूप प्रदान करता है। पोर्टल में रिपोर्टिंग, समीक्षा और स्वीकृति अधिकारियों के लिए एक सुव्यवस्थित रूप में उपलब्ध है।

इसके माध्यम से अधिकारियों के लिए मापनीय और गुणात्मक दोनों प्रकार के लक्ष्यों का निर्धारण किया जा सकता है। इससे प्रदर्शन मूल्यांकन की प्रक्रिया में एकरूपता, पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने में मदद मिल रही है।

मीटिंग मैनेजमेंट सिस्टम बैठकों से संबंधित पूरी प्रक्रिया को डिजिटल रूप से व्यवस्थित करता है। बैठक के आयोजन और नोटिस जारी करने से लेकर उपस्थिति, कार्यवाही और लिए गए निर्णयों पर कार्यवाही की निगरानी तक की व्यवस्था इस प्रणाली में शामिल है।

स्वचालित रिमाइंडर और एक्शन टेकन रिपोर्ट के माध्यम से लिए गए निर्णयों के अनुपालन की निगरानी को और मजबूत किया गया है। इसमें टास्क मैनेजमेंट की सुविधा भी है, जिसके माध्यम से अधिकृत अधिकारी कार्य सौंप सकते हैं, समय-सीमा निर्धारित कर सकते हैं और ऑनलाइन उनकी प्रगति की निगरानी कर सकते हैं।

डॉक्यूमेंट मैनेजमेंट सिस्टम अधिक कुशल और पेपरलेस प्रशासन की दिशा में एक और महत्वपूर्ण पहल है। यह आधिकारिक दस्तावेजों को सुरक्षित रूप से डिजिटल रूप में संग्रहित करने, प्रबंधित करने और आवश्यकता पड़ने पर आसानी से प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करता

पड़ता है। उनका समय और संसाधन सीमित होते हैं। रिटर्न दाखिल करने, क्रेडिट या रिफंड की व्यवस्था में प्रत्येक सुधार से ऐसे संसाधनों की अधिक से अधिक बचत होनी चाहिए, ताकि उनका उपयोग व्यवसाय के संचालन और विस्तार में किया जा सके।

7 अक्टूबर को जीएसटी परिषद के समक्ष रखे जाने वाले प्रस्ताव राज्यों के साथ निरंतर विचार-विमर्श और समन्वय के माध्यम से तैयार किए गए हैं। ये प्रस्ताव अनुपालन में लगने वाले समय और लागत को कम करने के उद्देश्य से पंजीकरण, रिटर्न, रिफंड, विवादों के निपटारे और इनपुट टैक्स क्रेडिट के सुगम प्रवाह से जुड़े हैं। करदाताओं का अनुभव ही इसके क्रियान्वयन का मुख्य मार्गदर्शक बना रहना चाहिए।

जीएसटी की बढ़ती परिपक्वता हमें सुधारों के अगले चरण के लिए एक सशस्त्र आधार प्रदान करती है। स्पष्टता, निश्चितता और करदाता के प्रति सम्मान की यही प्रतिबद्धता प्रत्यक्ष करों से जुड़े हमारे कार्य को भी दिशा देती है। एक भरोसेमंद कर प्रणाली उद्यमों को अपने तात्कालिक दायित्वों से आगे बढ़कर योजना बनाने तथा ऐसे अवसरों में निवेश करने में सक्षम बनाती है।

जिनके फलने-फूलने में समय लगता है। वे चाहे कहीं भी कार्य कर रहे हों, उन्हें यह भरोसा दिलाना प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की परिकल्पना के अनुरूप एक “विकसित भारत” की आर्थिक शक्ति के निर्माण में सहायक सिद्ध होता है।

है। इससे भौतिक फाइलों पर निर्भरता कम करने में मदद मिल रही है।

इस पहल को एक नई दिशा देते हुए डॉक्यूमेंट मैनेजमेंट सिस्टम में हाल ही में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की क्षमताओं को शामिल किया गया है। इससे दस्तावेज आधारित प्रशासनिक प्रक्रियाओं को और प्रभावी बनाने की संभावनाएं बढ़ी हैं।

हिम एक्सेस राज्य का सिंगल साइन-ऑन और डिजिटल पहचान प्लेटफॉर्म है, जो नागरिकों और सरकारी कर्मचारियों के लिए विभिन्न सरकारी सेवाओं और एप्लीकेशनों तक पहुंच का एक साझा प्रमाणीकरण तंत्र प्रणाली उपलब्ध करवाता है। इससे अलग-अलग सरकारी प्रणालियों के लिए अलग-अलग यूजर आईडी और पासवर्ड रखने की आवश्यकता कम होती है तथा डिजिटल सेवाओं तक पहुंच को अधिक सुविधाजनक और सुव्यवस्थित बनाया जा सकता है।

ये सभी पहल हिमाचल प्रदेश में सुशासन और प्रशासनिक सुधारों की दिशा में किए जा रहे निरंतर प्रयासों को दर्शाती हैं। डिजिटल वर्कफ्लो, ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी उभरती तकनीकों के समन्वय से राज्य सरकार प्रशासन को अधिक कुशल, पारदर्शी और जवाबदेह बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म के बढ़ते इस्तेमाल से न केवल सरकारी प्रक्रियाओं को गति मिल रही है, बल्कि नागरिकों तक सेवाओं की पहुंच को भी सरल और व्यवस्थित बनाने में मदद मिल रही है। इस प्रकार हिमाचल प्रदेश डिजिटल गवर्नेंस की ओर आगे बढ़ते हुए भविष्य की प्रशासनिक चुनौतियों के लिए एक अधिक सक्षम और आधुनिक शासन व्यवस्था तैयार करने की दिशा में प्रयासरत है।

## छह माह में चार हजार और शिक्षक भर्ती होंगे: मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने रामपुर के नोगली में जनसभा को संबोधित करते

एक्सीलेंस के रूप में विकसित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा और



हुए कहा कि प्रदेश सरकार के तीन वर्ष के कार्यकाल में 10 हजार से अधिक शिक्षकों की भर्ती की गई है और अगले छह माह में चार हजार और शिक्षकों की नियुक्ति की जाएगी। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश में 150 से अधिक सीबीएसई स्कूल खोले गए हैं, जबकि हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड से संबद्ध 300 विद्यालयों को स्कूल ऑफ

स्वास्थ्य सरकार की प्राथमिकताओं में हैं। प्रदेश के चिकित्सा महाविद्यालयों और अटल मेडिकल सुपर स्पेशियलिटी संस्थान चमियाना में आधुनिक मशीनें स्थापित की जा रही हैं। चिकित्सकों की कमी दूर करने के लिए 500 डॉक्टरों की नियुक्ति की गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के सभी सरकारी कर्मचारियों को पुरानी पेंशन योजना का लाभ दिया गया है

## एशियाई स्वर्ण पर हिमाचल की तीन बेटियों को एक-एक करोड़

शिमला/शैल। 20वें एशियाई खेलों में कबड्डी का स्वर्ण जीतकर देश

को हिमाचली टोपी और शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया।



और हिमाचल का नाम रोशन करने वाली तीन खिलाड़ियों पर सुक्खू सरकार ने बड़ा सम्मान बरसाया है। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने भारतीय महिला कबड्डी टीम की हिमाचली खिलाड़ी पुष्पा राणा, ज्योति ठाकुर और भावना ठाकुर को एक-एक करोड़ रुपये पुरस्कार राशि देने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री से मुलाकात के दौरान तीनों खिलाड़ियों

मुख्यमंत्री ने कहा कि खिलाड़ियों के सम्मान में जल्द समारोह आयोजित कर घोषित पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी। तीनों खिलाड़ियों को सरकारी सेवा में रोजगार देने की भी घोषणा की गई है। पुलिस विभाग में सेवाएं देने की इच्छुक नहीं होने वाली खिलाड़ियों को युवा सेवाएं एवं खेल विभाग में नियुक्ति दी जाएगी। सरकार का कहना है कि

और कांग्रेस सरकार के सत्ता में रहने तक ओपीएस जारी रहेगी। आउटसोर्स कर्मचारियों के हितों की रक्षा के लिए नीति तैयार की जा रही है, जिसे जल्द लागू किया जाएगा। करणामूलक आधार पर रोजगार के करीब 70 प्रतिशत पात्र मामलों का समाधान किया जा चुका है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत करने के साथ किसानों और पशुपालकों की आय बढ़ाने पर भी काम कर रही है। किशाऊ परियोजना में हिमाचल के हितों के अनुरूप समझौता लागू होने से संभावित खर्च में तीन से पांच हजार करोड़ रुपये की बचत हुई है। परियोजना से भविष्य में करीब 1,500 करोड़ रुपये सालाना आय की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि 'अपना परिवार, सुखी परिवार' योजना इसी माह लागू होगी, जिसके तहत पात्र महिलाओं को 1,500 रुपये मासिक सहायता और पात्र परिवारों को 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली देने का प्रावधान है।

इससे खिलाड़ी नौकरी के साथ प्रदेश में खेलों के विकास में योगदान देने और अपना खेल करियर जारी रखने में सक्षम होंगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने खेल नीति में संशोधन कर खिलाड़ियों के पुरस्कारों में ऐतिहासिक बढ़ोतरी की है। प्रदेश में खेल अधोसंरचना को मजबूत करने पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है।

वहीं, भारतीय महिला क्रिकेट टीम की हिमाचली खिलाड़ी रेणुका ठाकुर को भी शानदार उपलब्धियों के लिए एक करोड़ रुपये देने की घोषणा की गई है। सरकार के इस फैसले से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश का नाम चमकाने वाले खिलाड़ियों को बड़ा प्रोत्साहन मिला है।

इस अवसर पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल और मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार (मीडिया) नरेश चौहान भी मौजूद रहे।

## रामपुर में 233 करोड़ की 28 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण-शिलान्यास

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने रामपुर विधानसभा क्षेत्र में 232.93 करोड़ रुपये की 28 विकास परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास किए। शिंगला

गानवी खड्ड पर 1.84 करोड़ रुपये से निर्मित बैली ब्रिज का भी उद्घाटन किया गया।

उन्होंने विभिन्न सड़क परियोजनाओं का भूमि पूजन भी किया।



हेलीपैड में आयोजित कार्यक्रम में सड़क, पेयजल, सिंचाई, सीवरेज, स्वास्थ्य और पुल से जुड़ी परियोजनाएं शामिल रहीं।

मुख्यमंत्री ने भड़ावली में 4.83 करोड़ रुपये की उठाऊ पेयजल योजना, डकोलड़ में 8.36 करोड़ की सीवरेज प्रणाली, देवनगर में 2.56 करोड़ की प्रवाह सिंचाई योजना तथा खनैरी अस्पताल के लिए 71 लाख रुपये की सीवरेज कनेक्टिविटी का लोकार्पण किया। देलठ में 2.56 करोड़ रुपये से बने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भवन और

इनमें टिकर-जरोल-गाहन-ननखड़ी-खमाड़ी सड़क के उन्नयन के लिए 35.93 करोड़ और 54.87 करोड़ रुपये की परियोजनाएं प्रमुख हैं। इसके अलावा अस्पताल कॉलोनी-स सरलाप्रोग, कोटला-कुन्नी, राजपुरा-दरशाल, उरू-धार, सेरी पुल-अणुराक्षी, पलजारा-गिन्छा-पेई, कूट-किन्की सहित कई सड़कों के निर्माण व उन्नयन कार्य शुरू होंगे। इन परियोजनाओं से रामपुर में ग्रामीण संपर्क और बुनियादी सुविधाओं को मजबूती मिलने की उम्मीद है।

## भटवाड़ी में मुख्यमंत्री का रात्रि प्रवास, ग्रामीणों ने पारंपरिक अंदाज में किया स्वागत

शिमला/शैल। सरकार गांव के द्वार कार्यक्रम के तहत मुख्यमंत्री ठाकुर

के प्रधान प्रशनलाल के घर रात्रि प्रवास किया। ग्रामीणों ने उन्हें फाफरा, कोदे



सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने रोहडू के भटवाड़ी गांव में रात्रि प्रवास किया। ग्रामीणों ने पारंपरिक गीत 'लामण' और नाटी के साथ मुख्यमंत्री का स्वागत किया। मुख्यमंत्री भी ग्रामीणों के साथ नाटी में शामिल हुए। उन्होंने स्थानीय लोगों की समस्याएं सुनीं और अधिकारियों को समाधान के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने ग्राम पंचायत दिऊदी

की रोटी, लाल चावल और राजमा सहित स्थानीय व्यंजन परोसे। इस दौरान महिला मंडलों को पांच-पांच लाख रुपये देने की घोषणा की गई। बरशील पुल को मोटेबल बनाने, चिंगवाड़ी सड़क के लिए 20 लाख और पेखा-दिऊदी महिला मंडल भवन के लिए पांच लाख रुपये देने की घोषणा भी हुई। धमवाड़ी स्कूल को सीबीएसई बनाने का ऐलान किया।

## तकनीकी शिक्षा संस्थानों के लिए 35.34 करोड़ जारी

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश सरकार ने तकनीकी शिक्षा संस्थानों की अधोसंरचना मजबूत करने के लिए 35.34 करोड़ रुपये जारी किए हैं। तकनीकी शिक्षा मंत्री राजेश धर्माणी ने कहा कि सरकार पॉलिटेक्निक, इंजीनियरिंग और आईटीआई संस्थानों को आधुनिक सुविधाओं से लैस कर युवाओं को रोजगार के साथ उद्यमिता और नवाचार के लिए तैयार कर रही है।

जारी धनराशि में कांगड़ा जिला के आईटीआई बैजनाथ के लिए 3 करोड़ रुपये, आदर्श आईटीआई संसारपुर-टैरस के लिए 1.75 करोड़, राजकीय फार्मेसी कांगड़ा में सरकारी आवास के लिए 2.29 करोड़, राजकीय पॉलिटेक्निक कांगड़ा के अकादमिक ब्लॉक-बी के लिए 3 करोड़ तथा नगरोटा बगवां के बलधर में स्टेट ऑफ आर्ट आईटीआई भवन के लिए 3.50 करोड़ रुपये शामिल हैं।

सिरमौर में आईटीआई सराहां के लिए 3.71 करोड़, आईटीआई कफोटा के लिए 5.83 करोड़ और आईटीआई कौलावाला भूड के लिए 3.42 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं। कुल्लू के राजकीय पॉलिटेक्निक छात्रवास के लिए 3.58 करोड़, ऊना के आईटीआई भद्रकाली के लिए

3.26 करोड़ और मंडी के आईटीआई करसोग भवन के लिए 2 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

धर्माणी ने कहा कि सरकार का लक्ष्य युवाओं को गुणवत्तापूर्ण व्यावसायिक शिक्षा और बाजार की जरूरत के अनुरूप कौशल उपलब्ध करवाना है। इसके लिए आधुनिक पाठ्यक्रम, स्टार्ट-अप इकोसिस्टम और सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण पर भी जोर दिया जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के बदलते परिदृश्य को देखते हुए विद्यार्थियों को एक्सपोजर विजिट करवाई जा रही हैं।

उन्होंने बताया कि प्रदेश के तकनीकी संस्थानों के विद्यार्थियों को कजाकिस्तान और जापान के शैक्षणिक भ्रमण भी करवाए गए हैं, ताकि उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर की तकनीकी एवं औद्योगिक गतिविधियों से परिचित कराया जा सके।

सरकार का कहना है कि अधोसंरचना विस्तार के साथ तकनीकी शिक्षा को रोजगार और स्वरोजगार से जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसका उद्देश्य युवाओं को केवल नौकरी तलाशने वाला बनाने के बजाय रोजगार सृजन में सक्षम बनाना है।

अब इन निवेशों का वास्तविक

असर संस्थानों की सुविधाओं, प्रशिक्षण की गुणवत्ता और विद्यार्थियों के रोजगार परिणामों में दिखाई देना महत्वपूर्ण होगा। तकनीकी शिक्षा में अधोसंरचना के साथ उद्योगों की जरूरत के अनुरूप प्रशिक्षण और व्यावहारिक कौशल पर निरंतर जोर ही युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध करा सकता है।

## रैगिंग के आरोपों पर नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी की सफाई

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी शिमला में रैगिंग के आरोपों को लेकर चल रहे विवाद के बीच विश्वविद्यालय प्रशासन ने कहा है कि मामले की जांच अभी पूरी नहीं हुई है और किसी भी छात्र को दोषी ठहराने का अंतिम निर्णय नहीं लिया गया है। विश्वविद्यालय ने साफ किया कि 21 अगस्त 2026 को मिली रैगिंग संबंधी शिकायत पर यूजीसी के नियमों के तहत जांच चल रही है।

कुलपति प्रो. (डॉ.) प्रीती सक्सेना ने कहा कि जांच एंटी-रैगिंग स्क्वाड और एंटी-रैगिंग कमेटी के माध्यम से की जा रही है। विश्वविद्यालय का कहना है कि सीसीटीवी फुटेज सहित उपलब्ध

साक्ष्यों की जांच की जा रही है और सक्षम समिति के सामने पूरी सामग्री आने के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जाएगा। प्रशासन ने जांच पूरी होने से पहले आरोपों को तथ्य के रूप में प्रचारित करने पर भी सवाल उठाए हैं।

विश्वविद्यालय ने यह भी स्पष्ट किया कि शिकायतकर्ता ने स्वयं अर्की पुलिस थाने में एफआईआर दर्ज कराई थी। यह एफआईआर विश्वविद्यालय की ओर से दर्ज नहीं करवाई गई थी। हालांकि, एंटी-रैगिंग व्यवस्था की सिफारिश पर विश्वविद्यालय ने मामले की जानकारी धामी पुलिस चौकी को दी थी।

हाल की एक छात्र से जुड़ी घटना पर विश्वविद्यालय ने कहा कि सोशल

मीडिया पर वीडियो सामने आने के बाद अधिकारियों ने तत्काल कारवाई की। छात्र को पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र धामी और फिर आईजीएमसी शिमला ले जाया गया। विश्वविद्यालय के अधिकारियों और फैकल्टी ने चिकित्सा प्रक्रिया के दौरान छात्र और उसके परिवार के साथ समन्वय बनाए रखा।

प्रशासन ने कहा कि छात्रों के लिए एससी/एसटी सेल, समान अवसर सेल, मेंटरिंग, छात्र कल्याण और मनोवैज्ञानिक परामर्श जैसी व्यवस्थाएं उपलब्ध हैं। विश्वविद्यालय ने कहा कि पारदर्शिता, छात्र सुरक्षा और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों के तहत जांच जारी है। जांच में आरोप साबित होने पर नियमों के अनुसार सख्त कारवाई की जाएगी।

## धौलासिद्ध परियोजना पर सरकार का बड़ा दांव, एसजेवीएनएल से अधिग्रहण की तैयारी

शिमला/शैल। हिमाचल सरकार ने ब्यास नदी पर निर्माणाधीन 66 मेगावाट की धौलासिद्ध जलविद्युत परियोजना को अपने अधीन लेने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने बहुउद्देशीय परियोजनाएं एवं ऊर्जा विभाग को परियोजना के अधिग्रहण के लिए न्यायालय में शपथ पत्र दाखिल करने के निर्देश दिए हैं। सरकार परियोजना की लागत की पहली किस्त का भुगतान करने के लिए भी तैयार है। इससे संकेत साफ है कि सरकार धौलासिद्ध परियोजना पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिए अब कानूनी और वित्तीय दोनों स्तरों पर आगे बढ़ रही है।

धौलासिद्ध परियोजना का निर्माण सतलुज जल विद्युत निगम लिमिटेड (एसजेवीएनएल) कर रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के हितों से कोई समझौता नहीं करेगी और प्रदेश की संपदा तथा प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार का मानना है कि प्रदेश के जल संसाधनों से पैदा होने वाले लाभ में हिमाचल के हित को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

## पहाड़ी राज्यों के लिए आपदा राहत के नियम बदलें: मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने पहाड़ी राज्यों की भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए आपदा राहत राशि जारी करने के केंद्रीय मापदंडों में बदलाव की मांग उठाई है। मुख्यमंत्री से सोमवार को गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव एम. रामचंद्रु के नेतृत्व में अंतर-मंत्रालय केंद्रीय दल ने मुलाकात की। दल ने सितंबर में हिमाचल के

### 66 मेगावाट की परियोजना अपने अधीन लेने के लिए कोर्ट में शपथ पत्र दाखिल करेगी सरकार, लुहरी और सुन्नी पर भी नजर

धौलासिद्ध के साथ सरकार ने एसजेवीएनएल की लुहरी और सुन्नी जलविद्युत परियोजनाओं को भी अपने अधीन लेने के प्रयास तेज करने के संकेत दिए हैं। हालांकि इन परियोजनाओं के अधिग्रहण पर सरकार को कितना वित्तीय बोझ उठाना पड़ेगा और इससे राज्य को भविष्य में कितना आर्थिक लाभ मिलेगा, इसका विस्तृत आकलन अभी सार्वजनिक नहीं किया गया है। ऐसे में सरकार के इस फैसले की असली परीक्षा इसके वित्तीय परिणामों से होगी।

मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन अन्य जलविद्युत परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को काम में तेजी लाने और परियोजनाओं को तय समय सीमा में पूरा करने के निर्देश दिए। 450 मेगावाट की शोंगटोंग जलविद्युत परियोजना अगले वर्ष सितंबर तक तीन टरबाइनों की कमीशनिंग के बाद पूरी तरह कार्यशील होने की उम्मीद है। परियोजना से पैदा होने वाली बिजली

के लिए हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड लिमिटेड के साथ बिजली खरीद समझौता किया जाएगा।

बैठक में पूह-समदो और समदो-काजा के बीच बनाई जा रही 66 केवी ट्रांसमिशन लाइन की भी समीक्षा हुई। मुख्यमंत्री ने इसके निर्माण में तेजी लाने को कहा। वहीं, रंगरिक में 2 मेगावाट की सौर ऊर्जा परियोजना, जिसमें 1 मेगावाट की बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली लगाई गई है, को बर्फबारी शुरू होने से पहले चालू करने के निर्देश दिए गए हैं।

धौलासिद्ध को अपने अधीन लेने का फैसला इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हिमाचल लंबे समय से अपने जल संसाधनों पर अधिक अधिकार और आर्थिक हिस्सेदारी की मांग करता रहा है। अब सरकार को यह साबित करना होगा कि अधिग्रहण की लागत, संचालन और भविष्य की आय के बीच संतुलन प्रदेश के पक्ष में रहेगा। न्यायालय में दाखिल होने वाला शपथ पत्र इस प्रक्रिया का अगला महत्वपूर्ण कदम होगा।

### बादल फटने की घटनाओं का हो वैज्ञानिक अध्ययन

परिवर्तन के प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे हैं। प्रदेश में बादल फटने की घटनाएं लगातार चिंता का विषय बन रही हैं। उन्होंने इन घटनाओं के कारणों और बढ़ती आवृत्ति का वैज्ञानिक अध्ययन करवाने की आवश्यकता पर जोर दिया। सुक्खू ने कहा कि आपदा

आधारभूत ढांचे को नुकसान पहुंचने पर बहाली की लागत भी अधिक होती है। इसलिए राहत राशि तय करते समय पहाड़ी राज्यों की विशेष परिस्थितियों को अलग से ध्यान में रखा जाना चाहिए।

मुख्यमंत्री ने हिमाचल की पर्यावरणीय भूमिका का भी मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि प्रदेश उत्तर भारत के पारिस्थितिक तंत्र को संतुलित रखने के साथ स्वच्छ हवा उपलब्ध करवाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। ऐसे में विकास परियोजनाओं में पर्यावरण और आपदा जोखिम को ध्यान में रखना जरूरी है।

उन्होंने राजमार्गों के निर्माण के दौरान अधिक से अधिक सुरंगों के निर्माण पर भी जोर दिया। उनका कहना था कि इससे पहाड़ों की अनावश्यक कटिंग कम की जा सकती है और भूस्वलन जैसे जोखिमों को भी घटाने में मदद मिल सकती है।

बैठक में मुख्य सचिव के.के. पंत सहित प्रदेश सरकार के वरिष्ठ अधिकारी और अंतर-मंत्रालय केंद्रीय दल के सदस्य मौजूद रहे। अब निगाहें केंद्रीय दल की रिपोर्ट और उसके आधार पर हिमाचल को मिलने वाली संभावित आपदा राहत पर टिकी हैं।



आपदा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर नुकसान का जायजा लिया था।

मुख्यमंत्री ने दल के साथ प्रदेश में बरसात के दौरान हुई प्राकृतिक आपदाओं और उससे हुए नुकसान पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि हिमाचल में जलवायु

राहत के लिए केंद्र द्वारा तय मौजूदा मापदंड पहाड़ी राज्यों की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप नहीं हैं। हिमाचल जैसे राज्यों में भौगोलिक परिस्थितियां मैदानी राज्यों से पूरी तरह अलग हैं। यहां सड़क, पुल, पेयजल और अन्य

## जॉब ट्रेनी चिकित्सकों को पीजी करने की अनुमति मिलेगी

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने जॉब ट्रेनी प्रशिक्षु चिकित्सकों को स्नातकोत्तर (पीजी) और सुपर-स्पेशियलिटी पाठ्यक्रम करने की अनुमति देने के निर्देश स्वास्थ्य विभाग को दिए हैं। स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि चिकित्सकों के बॉन्ड की अवधि और राशि बढ़ाई जाएगी, ताकि विशेषज्ञता हासिल करने के बाद वे हिमाचल लौटकर मरीजों की सेवा कर सकें।

मुख्यमंत्री ने सभी सरकारी मेडिकल कॉलेजों को रेडियोलॉजी विभाग में होने वाली एमआरआई, सीटी स्कैन, एक्स-रे और अल्ट्रासाउंड जांच से जुड़ा डेटा 20 अक्टूबर तक एंड-टू-एंड डिजिटाइज करने के निर्देश दिए। इसके

लिए सरकार पर्याप्त मानव संसाधन उपलब्ध करवाएगी। मेडिकल कॉलेजों से नर्सों और तकनीशियनों की विभागवार जरूरत की जानकारी भी मांगी गई है, ताकि भर्ती प्रक्रिया में तेजी लाई जा सके।

उन्होंने कहा कि सरकार प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत करने के साथ आधुनिक जांच सेवाओं पर भी ध्यान दे रही है। सभी सरकारी मेडिकल कॉलेजों और एआईएमएसएस चमियाणा में सेंटर ऑफ एक्सीलेस विकसित करने की संभावनाओं का अध्ययन करने के लिए विशेषज्ञ समिति गठित की गई है। समिति प्रत्येक संस्थान में दो से चार ऐसे विभागों की पहचान करेगी, जिन्हें जटिल, दुर्लभ और गंभीर बीमारियों के उपचार के लिए विशेष केंद्र के रूप में विकसित

किया जा सकता है।

मुख्यमंत्री ने चिकित्सा विद्यार्थियों को विदेशों में एक्सपोजर विजिट पर भेजने की योजना में भी तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विदेशी संस्थानों की बेहतर कार्यप्रणाली और अनुभव से विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा और इसका उपयोग प्रदेश में मरीजों के उपचार को बेहतर बनाने में किया जा सकेगा।

बैठक में स्वास्थ्य मंत्री डॉ. कर्नल धनी राम शांडिल, सचिव स्वास्थ्य आशीष सिंहमार, निदेशक चिकित्सा शिक्षा डॉ. गोपाल बेरी और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के मिशन निदेशक प्रदीप कुमार ठाकुर मौजूद रहे। मेडिकल कॉलेजों के प्रधानाचार्यों ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक में भाग लिया।

## मुख्यमंत्री ने मेजर विजय सिंह मनकोटिया के निधन पर शोक व्यक्त किया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू ने पूर्व मंत्री मेजर विजय सिंह मनकोटिया के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। मेजर विजय सिंह मनकोटिया का आज प्रातः कांगड़ा जिले स्थित उनके पैतृक गांव त्यारा में निधन हो गया। वे 87 वर्ष के थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मेजर विजय सिंह मनकोटिया ने प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विशेष रूप से कांगड़ा जिले के शाहपुर विधानसभा क्षेत्र के विकास और जनकल्याण के लिए उनके योगदान को सदैव याद किया जाएगा। उन्होंने कहा कि समाज के कल्याण और लोगों की सेवा के लिए मेजर

विजय सिंह मनकोटिया द्वारा किए गए कार्य सदैव स्मरणीय रहेंगे।

मुख्यमंत्री ने परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। उन्होंने शोक-संतप्त परिजनों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति एवं सबल प्रदान करने की कामना की।

मेजर विजय सिंह मनकोटिया वर्ष 1982, 1985, 1990, 1993 और 2003 में हिमाचल प्रदेश विधानसभा के लिए निर्वाचित हुए थे। उन्होंने वर्ष 1995 से 1998 तक तथा मार्च 2003 से जुलाई 2004 तक पर्यटन, नागरिक उड्डयन एवं विधि मंत्री के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

## न्यूजीलैंड से सेब बागवानी में तकनीकी सहयोग पर चर्चा

शिमला/शैल। न्यूजीलैंड के उच्चायुक्त पैट्रिक राटा के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू से मुलाकात की। बैठक में हिमाचल की सेब बागवानी को आधुनिक तकनीक और नवाचार से मजबूत करने पर चर्चा हुई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सेब उत्पादन प्रदेश की आर्थिकी का महत्वपूर्ण आधार है। प्रदेश सरकार बागवानी क्षेत्र को सुदृढ़ करने के लिए नई तकनीक और नवाचार को बढ़ावा दे रही है। उन्होंने हिमाचल और न्यूजीलैंड के किसानों तथा बागवानों के बीच अनुभव साझा करने के लिए एक्सपोजर विजिट आयोजित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

बैठक में प्राकृतिक खेती से जुड़े विषयों पर भी चर्चा हुई।

न्यूजीलैंड के प्रतिनिधिमंडल ने हिमाचल में सेब उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी विशेषज्ञता उपलब्ध करवाने की इच्छा जताई। प्रतिनिधिमंडल ने प्रदेश में प्रस्तावित सेंटर ऑफ एक्सीलेस की स्थापना के संबंध में भी जानकारी दी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि न्यूजीलैंड की विशेषज्ञता से हिमाचल के बागवानों को आधुनिक उत्पादन तकनीक और वैज्ञानिक जानकारी मिल सकती है। इससे सेब की गुणवत्ता और उत्पादकता बढ़ाने तथा बदलती जलवायु की चुनौतियों से निपटने में मदद मिलेगी। बैठक में मुख्य सचिव के.के. पंत सहित दोनों पक्षों के अधिकारी मौजूद रहे।

## ओडिशा के 32 जिलों से हिमाचल पहुंचे 47 विद्यार्थियों ने मुख्यमंत्री से की मुलाकात

शिमला/शैल। युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत ओडिशा के 32 जिलों से हिमाचल भ्रमण पर आए 47 विद्यार्थियों ने मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्द्र सिंह सुक्खू से भेंट की। 18 से 30 वर्ष आयु वर्ग के ये विद्यार्थी 3 से 8 अक्टूबर तक प्रदेश के विभिन्न हिस्सों का भ्रमण कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों का हिमाचल पहुंचने पर स्वागत किया और उनके भ्रमण के अनुभवों की

ज्वालामुखी मंदिर सहित प्रदेश के अन्य प्रमुख स्थलों का दौरा करेंगे। विद्यार्थियों ने मुख्यमंत्री को ओडिशा की सांस्कृतिक और हस्तशिल्प विरासत का प्रतीक पारंपरिक 'संबलपुरी उत्तरीय' और ढोकरा कला की पेंटिंग भेंट की।

युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न राज्यों के युवाओं को एक-दूसरे की संस्कृति, इतिहास और विकास यात्रा से परिचित करवाना है। इससे युवाओं के बीच संवाद और



जानकारी ली। उन्होंने कहा कि हिमाचल के लोग शांतिप्रिय हैं और प्रदेश की समृद्ध देव संस्कृति से गहराई से जुड़े हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को लक्ष्य हासिल करने के लिए मेहनत, समर्पण और ईमानदारी से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

विद्यार्थियों ने अब तक एनआईटी हमीरपुर और शिमला का भ्रमण किया है। आगामी दिनों में वे आईआईटी मंडी, अटल टनल,

सांस्कृतिक समझ बढ़ाने के साथ राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना को मजबूत करने में मदद मिलती है। इसी कार्यक्रम के तहत हिमाचल के करीब 50 विद्यार्थी 12 से 19 अक्टूबर तक ओडिशा का भ्रमण करेंगे।

इस अवसर पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. कर्नल धनी राम शांडिल और मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार मीडिया नरेश चौहान भी मौजूद रहे।

# कांग्रेस की अंदरूनी कलह पर राणा का वार

शिमला/शैल। हिमाचल की राजनीति में विधानसभा चुनाव की आहट के साथ कांग्रेस के भीतर खींचतान का मुद्दा फिर गरमाने लगा है। भाजपा के वरिष्ठ प्रदेश प्रवक्ता एवं पूर्व विधायक राजेंद्र राणा ने मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू पर सीधा हमला बोलते हुए दावा किया है कि सरकार की सबसे बड़ी चुनौती अब विपक्ष नहीं, बल्कि उसकी अपनी कांग्रेस बनती जा रही है। राणा ने मुख्यमंत्री से सवाल किया कि रोहडू और रामपुर प्रवास के दौरान लगाए गए कांग्रेस के पोस्टरों में पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह को अपेक्षित स्थान क्यों नहीं दिया गया और पार्टी के भीतर इसको लेकर उठ रहे सवालों का जवाब कौन देगा?

राणा ने कहा कि जैसे-जैसे अगला विधानसभा चुनाव नजदीक आ रहा है, कांग्रेस के अंदर की खींचतान भी सामने आने लगी है। उनके मुताबिक वीरभद्र सिंह लंबे समय तक हिमाचल कांग्रेस के सबसे बड़े राजनीतिक चेहरों में रहे और रोहडू-रामपुर क्षेत्र उनकी राजनीतिक विरासत से गहराई से जुड़ा रहा है। ऐसे में इन क्षेत्रों में पार्टी के कार्यक्रमों और प्रचार सामग्री में वीरभद्र सिंह की मौजूदगी को लेकर उठे सवालों को केवल पोस्टर का मामला मानकर खारिज नहीं किया जा सकता।

उन्होंने मुख्यमंत्री पर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा में गुटबाजी तलाशने से पहले उन्हें अपनी पार्टी की स्थिति देखनी चाहिए। राणा का आरोप है कि सरकार बनने के बाद से ही कांग्रेस के भीतर नेताओं, विधायकों और संगठन के बीच बेहतर समन्वय को लेकर सवाल उठते रहे हैं। उन्होंने कहा कि अब सरकार के सामने केवल विपक्ष के आरोपों का जवाब देने की चुनौती नहीं है, बल्कि उसे अपनी पार्टी के भीतर उठ रही आवाजों का भी सामना करना पड़ रहा है।

राणा ने कांग्रेस की प्रदेश प्रभारी रजनी पाटिल के संगठन में अनुशासन और समन्वय को लेकर दिए गए बयानों का हवाला देते हुए कहा कि इससे भी साफ होता है कि कांग्रेस के

भीतर सब कुछ ठीक नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि निर्वाचित जनप्रतिनिधियों की अपेक्षा मुख्यमंत्री के करीबी लोगों का प्रभाव ज्यादा दिखाई देता है। हालांकि ये भाजपा के आरोप हैं, लेकिन राणा ने मुख्यमंत्री से मांग की कि वह कांग्रेस के भीतर चल रही स्थिति पर खुलकर अपना पक्ष रखें।

सबसे ज्यादा निशाना मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर साधा गया। राणा ने कहा कि सरकार के गठन के बाद से ही मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर समय-समय पर चर्चाएं होती रही हैं, लेकिन लंबे समय से खाली पद अब तक नहीं भरा गया। उन्होंने कहा कि कभी कुल्लू के विधायक सुंदर सिंह ठाकुर का नाम मंत्री पद के लिए सामने आया तो बाद में पालमपुर के विधायक आशीष बुटेल का नाम भी चर्चा में जुड़ गया। इसके बावजूद विस्तार की तस्वीर साफ नहीं हुई।

राणा ने कहा कि एक तरफ मुख्यमंत्री मंत्रिमंडल विस्तार की संभावना जताते रहे हैं, जबकि दूसरी तरफ पार्टी की प्रदेश प्रभारी की ओर से यह बात सामने आई

कि मुख्यमंत्री की ओर से विस्तार का प्रस्ताव नहीं आया। भाजपा नेता ने इसी विरोधाभास को मुद्दा बनाते हुए पूछा कि आखिर सरकार में सच क्या है? उनका कहना है कि यदि मंत्रिमंडल विस्तार करना है तो मुख्यमंत्री समय सीमा स्पष्ट करें और यदि नहीं करना है तो बार-बार इसकी चर्चा क्यों की जाती है।

राणा ने तंज कसते हुए कहा कि मंत्रिमंडल विस्तार अब सरकार के लिए ऐसा विषय बन गया है जिसकी घोषणा तो बार-बार होती है, लेकिन जमीन पर फैसला दिखाई नहीं देता। उन्होंने कहा कि मंत्री बनना किस विधायक को है, यह कांग्रेस का आंतरिक मामला है, लेकिन जब मुख्यमंत्री स्वयं सार्वजनिक रूप से इस मुद्दे पर बयान देते हैं तो जनता को स्थिति स्पष्ट करने का अधिकार है।

भाजपा नेता ने मुख्यमंत्री पर 'मित्र मंडली' के प्रभाव का भी आरोप लगाया। उनका कहना है कि सरकार के आसपास गैर-निर्वाचित लोगों का प्रभाव बढ़ा है और कई निर्वाचित विधायकों तथा मंत्रियों को

अपेक्षित महत्व नहीं मिल रहा। राणा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस के भीतर असंतोष का एक कारण यही राजनीतिक कार्यशैली भी है। उन्होंने कहा कि सरकार बनने के बाद 'व्यवस्था परिवर्तन' का नारा दिया गया था, लेकिन अब कांग्रेस के भीतर ही नई व्यवस्था को लेकर सवाल उठ रहे हैं।

राणा ने सरकार की वित्तीय स्थिति को भी चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिश की। उन्होंने दावा किया कि प्रदेश का कुल कर्ज करीब 1.15 लाख करोड़ रुपये के स्तर तक पहुंच गया है। उन्होंने सरकार से श्वेतपत्र जारी करने की मांग की, जिसमें मौजूदा सरकार के कार्यकाल में लिए गए कर्ज, उसके इस्तेमाल, ब्याज भुगतान और विकास कार्यों पर खर्च का पूरा ब्यौरा दिया जाए। राणा का कहना है कि कर्ज की वास्तविक स्थिति जनता के सामने आने के बाद ही यह पता चलेगा कि सरकार ने उधार का कितना पैसा विकास पर लगाया और कितना पुराने दायित्वों को पूरा करने में खर्च हुआ।

उन्होंने कर्मचारी वर्ग के वित्तीय लाभ, महिलाओं से किए

गए चुनावी वादों, युवाओं के रोजगार और बागवानों की समस्याओं को भी सरकार के सामने बड़ी चुनौती बताया। राणा ने कहा कि इन वर्गों की अपेक्षाएं लगातार बढ़ रही हैं और सरकार को केवल राजनीतिक बयानबाजी के बजाय इन मुद्दों पर ठोस जवाब देना होगा।

राजेंद्र राणा ने मुख्यमंत्री से कांग्रेस के भीतर वरिष्ठ नेताओं, मंत्रियों, विधायकों और संगठन के बीच समन्वय की स्थिति स्पष्ट करने की मांग की। उन्होंने कहा कि यदि सरकार विपक्ष पर हमला करने के बजाय अपनी पार्टी के भीतर संवाद मजबूत करे और विकास कार्यों पर ध्यान दे तो इसका लाभ प्रदेश को मिलेगा।

भाजपा नेता के इन आरोपों ने साफ कर दिया है कि आने वाले समय में कांग्रेस की अंदरूनी राजनीति भी हिमाचल के चुनावी विमर्श का बड़ा हिस्सा बनने वाली है। हालांकि राणा के आरोपों पर कांग्रेस और मुख्यमंत्री का पक्ष सामने आना बाकी है, लेकिन एक बात स्पष्ट है कि 2027 की लड़ाई से पहले भाजपा कांग्रेस के भीतर के मतभेदों को बड़ा राजनीतिक हथियार बनाने की तैयारी में है।

## लाहौल-स्पीति जिला परिषद भी हारी कांग्रेस

शिमला/शैल। हिमाचल की जिला परिषदों में बदले राजनीतिक समीकरण ने सुक्खू सरकार के सामने नई चुनौती खड़ी कर दी है। लाहौल-स्पीति में भाजपा समर्थित ठिनले दिचेन के जिला परिषद अध्यक्ष चुने जाने के बाद भाजपा ने इसे कांग्रेस सरकार के खिलाफ बढ़ते राजनीतिक असंतोष का संकेत बताया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल के अनुसार प्रदेश की 12 जिला परिषदों में से 11 में भाजपा समर्थित नेतृत्व सामने आया है। पार्टी अब इन नतीजों को 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले ग्रामीण हिमाचल की बदलती राजनीतिक हवा के रूप में पेश कर रही है।

लाहौल-स्पीति में अध्यक्ष पद का चुनाव लंबे समय से लंबित था। चुनाव पूरा होते ही भाजपा समर्थित उम्मीदवार की जीत ने कांग्रेस-भाजपा के बीच

राजनीतिक बयानबाजी को और तेज कर दिया है। बिंदल ने कहा कि मुख्यमंत्री के गृह जिले से लेकर उपमुख्यमंत्री के गृह जिले, शिमला, कांगड़ा और अब लाहौल-स्पीति तक भाजपा समर्थित नेतृत्व का सामने आना सामान्य स्थानीय चुनावी घटनाक्रम नहीं है। उनके अनुसार यह कांग्रेस सरकार के लिए लगातार सामने आ रहे राजनीतिक संकेत हैं।

बिंदल ने दावा किया कि जिला परिषदों में अपना नेतृत्व स्थापित करने के लिए कांग्रेस ने पूरी ताकत लगाई, लेकिन अधिकांश स्थानों पर भाजपा समर्थित प्रतिनिधियों ने बाजी मार ली। उन्होंने लाहौल-स्पीति में कांग्रेस पर सत्ता और सरकारी प्रभाव के इस्तेमाल का आरोप भी लगाया। उनका कहना था कि इन प्रयासों के बावजूद भाजपा समर्थित उम्मीदवार का अध्यक्ष

बनना कांग्रेस के लिए राजनीतिक झटका है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने जिला परिषदों के परिणामों को मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व वाली सरकार के खिलाफ "जनमत संग्रह" तक करार दिया। उन्होंने कहा कि पंचायत और जिला परिषद स्तर पर चुने गए प्रतिनिधियों के जरिए जनता ने अपनी राजनीतिक पसंद का संकेत दिया है।

भाजपा के इस दावे का असली राजनीतिक महत्व 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारी के संदर्भ में देखा जा रहा है। कांग्रेस के लिए चुनौती केवल जिला परिषदों में नेतृत्व तक सीमित नहीं है। यदि स्थानीय निकायों के इन समीकरणों को ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार के खिलाफ माहौल के रूप में पेश करने में भाजपा सफल होती है, तो यह आगामी विधानसभा चुनाव में

विपक्ष के लिए बड़ा राजनीतिक हथियार बन सकता है।

हालांकि जिला परिषद अध्यक्ष पद के चुनाव सीधे विधानसभा चुनाव का जनादेश नहीं होते और स्थानीय समीकरणों की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इन नतीजों को लेकर कांग्रेस की राजनीतिक प्रतिक्रिया भी महत्वपूर्ण होगी। इसके बावजूद भाजपा इन नतीजों को सुक्खू सरकार के खिलाफ अपने राजनीतिक अभियान का आधार बना रही है।

लाहौल-स्पीति की हार के बाद कांग्रेस के लिए चुनौती यह है कि स्थानीय निकायों में भाजपा के बढ़ते प्रभाव के बीच वह अपने संगठन और सरकार की स्वीकार्यता को किस तरह मजबूत करती है। भाजपा की इस जीत बाद अब सवाल यह है कि क्या जिला परिषदों का यह बदला समीकरण 2027 में विधानसभा की राजनीति को प्रभावित करेगा।